ज़िक्रे इलाही

भाषण

हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद
ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ि अल्लाह अन्हो

नाम पुस्तक	:	ज़िक्रे इलाही
Name of book	:	Zikr-e-ilahi
भाषण	:	हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ि अल्लाह अन्हो
Lecture	:	Hazrat Mirza Bashiruddin Mahmud Ahmad, Khlifatul Masih Sani Razi.
अनुवादक	:	शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री
Translator	:	Shaikh Mujahid Ahmad Shastri
प्रथम हिन्दी संस्करण	:	अक्तूबर 2017
1st Hindi Edition	:	October 2017
संख्या	:	1000
Quantity	:	1000
प्रकाशक	:	मज्लिस अंसारुल्लाह भारत, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
Publisher	:	Majlis Ansrullah Bharat Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur, (Punjab)
मुद्रक	:	फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान, ज़िला-गुरदासपुर, पंजाब
Printed at	:	Fazl-e-Umar Printing Press, Qadian, Distt- Gurdaspur, Punjab

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिलकरीम व अला अब्दिहिल मसीहिल मौऊद

ज़िक्रे इलाही

तक़रीर हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ि अल्लाह अन्हो

जलसा सालाना 28 दिसंबर 1916 ई.

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلَى الَّذِىْ خَلَقَ فَسَوّٰى وَ الَّذِىْ قَدَّرَ فَهَدٰى وَ الَّذِىْٓ اَخْرَجَ الْمَرْعٰى فَجَعَلَهٗ غُثَآءً اَحْوٰى سَنُقْرِئُكَ فَلَا تَنْسٰٓى اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ اِنَّهٗ يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَ مَا يَخْفٰى وَ نُيَسِّرُكَ لِلْيُسْرٰى فَذَكِّرْ اِنْ نَّفَعَتِ الذِّكْرٰى سَيَذَّكَّرُ مَنْ يَّخْشٰى وَ يَتَجَنَّبُهَا الْاَشْقَى الَّذِىْ يَصْلَى النَّارَ الْكُبْرٰى ثُمَّ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَ لَا يَحْيٰى قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى وَ ذَكَرَ اسْمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰى بَلْ تُؤْثِرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ وَّ اَبْقٰى اِنَّ هٰذَا لَفِى الصُّحُفِ الْاُوْلٰى صُحُفِ اِبْرٰهِيْمَ وَ مُوْسٰى (सूर: आला)

ज़िक्रे इलाही के इस विषय का महत्व कितना है:

आज मेरा विषय जैसा कि मैंने कल कहा था एक ऐसी बात से संबंधित है जिसके बारे में मेरा विश्वास है कि वह निहायत ही ज़रूरी है और यह केवल

अटकलें और अनुमान पर ही नहीं बल्कि इस के बारे में क़ुरआन की आयतों का भी निर्णय और आदेश है। शायद कुछ लोग इसे सुनकर कह दें कि यह तो मामूली बात है और हम पहले से ही इसे जानते हैं। लोगों के दिलों का हाल तो सिवाय अल्लाह तआला के और कोई नहीं जानता। मगर वर्तमान स्थिति के अनुसार कह सकता हूँ और कहता हूँ कि इस विषय में कई बातें ऐसी बयान की जाएंगी जिन्हें अक्सर लोग नहीं जानते और जिन्हें मैंने किसी किताब में भी नहीं देखा।

चूंकि विषय ऐसा साधारण है कि इसके शीर्षक को सुनकर अक्सर लोग कह देंगे कि यह तो मामूली और पहले का जाना हुआ है। इसलिए मैं इसको सुनाने से पहले यह बता देना आवश्यक समझता हूँ कि यह विषय बहुत आवश्यक और प्रमुख है इसलिए इस को ध्यान से सुनिए। अगर अल्लाह तआला ने तौफ़ीक़ दी तो इस में बहुत सी बातें ऐसी बयान करूँगा कि आप लोग नोट करके उन पर अमल करेंगे तो ख़ुदा तआला उन्हें तुम्हारे लिए बहुत ख़ैर और ख़ूबी का कारण बनाएगा मगर पहले इसके कि मैं मूल विषय शुरू करूं एक और बात सुना देना चाहता हूँ जो यह है-

जलसा में आकर लाभ उठाना चाहिए:

कुछ लोग जो जलसा में शामिल होने के लिए आते हैं वह इधर उधर फिर कर अपना समय बिता देते हैं यह बहुत बुरी बात है। अल्लाह तआला ने उन्हें रुपया इसलिए नहीं दिया कि बर्बाद करें। अगर उन्होंने यहां आकर बेकार ही फिरना था तो उन्हें यहां आने की ज़रूरत ही क्या थी? जो लोग यहाँ आते हैं वे कष्ट उठाकर और रुपया खर्च करके इसलिए आते हैं कि कुछ सुनें और लाभ उठाएं। लेकिन मुझ तक यह शिकायत पहुंची है कि व्याख्यान देने वाले के व्याख्यान देने के समय कई लोग उठकर इसलिए चले जाते हैं कि ये बातें तो हम ने पहले ही सुनी हुई हैं। ऐसे लोगों को मैं कहता हूँ कि अगर उनकी यह बात सही है कि जो बात सुनी हुई हो उसे फिर नहीं सुनना चाहिए तो उन्हें क़ुरआन भी दोबारा नहीं पढ़ना चाहिए और एक बार पढ़ कर छोड़ देना चाहिए। इसी तरह नमाज़ और रोज़ा के बारे में भी करना चाहिए। लेकिन

यह सही नहीं है। अतः अगर कोई ऐसी बात सुनाई जा रही हो जो पहले भी सुनी हो। तो उसे भी पूरे शौक और ध्यान पूर्वक सुनना चाहिए। क्योंकि इस प्रकार भी बहुत लाभ होता है और वह बात पूरी तरह से ह्रदय पर बैठ जाती है। फिर अगर मज्लिस से एक उठता है तो दूसरा भी उसे देख कर उठ खड़ा होता है और तीसरा भी। इसी तरह कई लोग उठना शुरू हो जाते हैं जो बहुत बुरी बात है। हाँ अगर किसी को उठने की सख्त ज़रूरत हो जैसे पेशाब या पाख़ाना करना हो तो वह उठे और बाहर चला जाए मगर चाहिए कि अपनी ज़रूरत को पूरा करके बहुत जल्दी वापस चला आये ताकि यहाँ जिस उद्देश्य और लक्ष्य के लिए आया है वह उसे मिल सके और जिस लाभ के लिए जलसा में शामिल हुआ है वह मिल सके। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया है कि जब कोई व्यक्ति किसी नेक मज्लिस में बैठता है तो बिना इसके कि वहाँ की बातें सुने और उन पर अमल करे यूं भी उसे लाभ हो जाता है। हदीस में आता है एक मज्लिस में कुछ आदमी बैठे थे अल्लाह तआला ने फरिश्तों से पूछा कि मेरे अमुक बन्दे क्या कर रहे थे। (रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमाते हैं कि अल्लाह तआला ने उनके बारे में इसलिए नहीं पूछा कि वह जानता न था बल्कि अल्लाह तआला मूल घटना को ख़ूब जानता था।) उन्होंने कहा ज़िक्रे इलाही कर रहे थे। अल्लाह तआला ने फरमाया कि जो कुछ उन्होंने मांगा मैंने उन्हें दिया। फरिश्तों ने कहा उन में एक ऐसा व्यक्ति भी बैठा था जो ज़िक्रे इलाही नहीं करता था यूं ही बैठा था। अल्लाह तआला ने फरमाया उनके पास बैठने वाला वंचित नहीं रह सकता मैं उसे भी पुरस्कार व सम्मान दूंगा। (बुख़ारी किताबुद्दाअवात) अर्थात नेकों की संगति में जो बैठता है चाहे एक बार उसे हिदायत नसीब न हो लेकिन दूसरे समय में ज़रूर मिल जाती है। यह नहीं हो सकता कि बावजूद दिल की श्रद्धा से ऐसी सभा में बैठने के वह काफिर ही रहे। हाँ जो एकाध बार बैठकर फिर नहीं आता और काफिर ही रहता है उसके लिए यह बात नहीं है। तो आप लोग बहुत हद तक मज्लिस में बैठे रहने की कोशिश करें और अगर किसी को कोई सख्त ज़रूरत हो तो उसे

पूरा करके जल्दी वापस आए।

दुआ के तरीके वर्णन करने से अल्लाह तआला ने और अधिक प्रकट कर दिया:

मैंने पिछले दिनों दुआ से संबंधित कुछ ख़ुत्बे कहे थे और उन में अल्लाह तआला की कृपा से इस प्रकार के विषय बयान हुए थे कि जिनसे कई लोगों ने लाभ उठाया। मेरे पास कई ख़त आए जिन में लिखा था कि उनसे बहुत लाभ हुआ। उन से संबंधित मुझे एक व्यक्ति ने लाहौर से पत्र लिखा था उसका नाम नहीं पढ़ा गया था मालूम होता है अल्लाह तआला ने उसके बारे में सत्तारी (छुपाने) से काम लिया। उसने लिखा कि आप ने यह क्या कर दिया कि आप ने वह तरीके बता दिए जो अत्यन्त गोपनीय छुपे चले आते थे और जिन में से सूफ़ी कोई एकाध, वर्षों सेवाऐं लेने के बाद बताते थे। आप ने तो भांडा ही फोड़ दिया। इसके साथ ही उसने यह भी लिखा कि आप भी ऐसा करने के लिए मजबूर थे क्योंकि आप को अपनी जमाअत से बहुत प्यार है इसलिए उन्हें ये तरीके बता दिए हैं। इसके बारे में मैं कहता हूँ कि मैंने केवल इसीलिए वे तरीके नहीं बताए थे कि मुझे अपनी जमाअत से मुहब्बत है। इसमें संदेह नहीं कि मुझे प्यार है और ऐसा प्रेम है कि और किसी को अपने सगे सम्बंधियों से भी क्या होगा। लेकिन मुझे लगता है वे तरीके इसलिए भी बताए कि मैं जानता हूँ कि वह ख़ुदा जिसने मुझे वह बताए थे ऐसा ख़ुदा है कि उसका दिया हुआ माल जितना अधिक खर्च किया जाए उतना ही अधिक बढ़ता और बड़े बड़े पुरस्कारों का कारण बनता है। यही कारण है कि मैंने जितने तरीके बताए थे उन्हें बता कर अपना घर खाली नहीं किया बल्कि और अधिक भर लिया था। फिर मुझे विश्वास था कि उनके बताने से मुझे कोई नुकसान नहीं होगा। क्योंकि ज्ञान कोई ऐसी चीज नहीं है जो खर्च करने से घटे। बल्कि ऐसी बात है कि जो खर्च करने से बढ़ती है लेकिन अगर मुझे यह भी विश्वास होता तो जिस तरह सहाबा किराम रज़ि कहते हैं कि अगर हमारी गर्दन पर तलवार रख दी जाए और हमें रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की कोई ऐसी बात याद हो जो किसी के सामने

बयान न की जा चुकी हो। तो पहले कि तलवार हमारी गर्दन काटे वह बयान कर देंगे। (बुख़ारी किताबुल इल्म) इसी तरह मैं भी कहता हूँ कि अगर वर्णन करते करते समस्त तरीके समाप्त हो जाते तो भी ज़रूर सबको बयान कर देता। इसलिए इस समय जितना हो सके मैंने बयान किए। और मेरे दिल में यूं ही विचार गुज़रा कि दुआ के बारे में जितने तरीके थे मैंने सारे के सारे बयान कर दिए हैं। लेकिन जब मैं नमाज़ के बाद घर आया और दुआ करने लगा तो अल्लाह तआला ने इतने तरीके मुझे समझाए जो पहले कभी मेरे विचार और गुमान में भी नहीं आए थे। अब भी जिस विषय पर बोलना चाहता हूँ उसके बारे में जहां तक मुझ से हो सका। नोट लिखकर लाया था। लेकिन रास्ते में ही आते-आते अल्लाह तआला ने और बहुत सी बातें सुझा दीं। तो मैंने दुआ के तरीके बताए थे जो बहुत आवश्यक थे।

इस विषय का पालन करने से दुआ अपने आप मक़्बूल (स्वीकृत) होगी:

लेकिन अब जो कुछ बयान करना चाहता हूँ वह दुआ के तरीके से भी अधिक आवश्यक है अगर इसे आप लोग अच्छी तरह समझ लें और उस पर अमल करें तो आप की दुआ अपने आप स्वीकार हो जाएगी।

पिछले साल इस विषय का वर्णन न कर सकने में हिक्मत:

पिछले साल इसी विषय पर वर्णन करने का मेरा इरादा था लेकिन एक दूसरा विषय जो शुरू किया कि वह भी आवश्यक था, तो यह रह गया। इसमें ख़ुदा तआला की हिक्मत ही थी और वह यह कि अब जो मैं इस के बारे में नोट लिखने लगा। तो पिछले साल के नोट इस के मुकाबला में ऐसे मालूम होने लगे जैसे उस्ताद के मुकाबला में शिष्य के लिखे होते हैं। क्योंकि पहले की तुलना में अब बहुत ज़्यादा बातें मुझे समझाई गई हैं। अत: आज इस विषय में जो ज़िक्रे इलाही से संबंधित है। आप लोगों को कुछ सुनाना चाहता हूं और इस अवसर पर इसलिए सुनाना चाहता हूँ कि अक्सर लोग अखबारें तो पढ़ते नहीं। इसलिए किसी और अवसर पर बताई हुई बात केवल उन्हीं लोगों तक पहुंचती हो जो अख़बार पढ़ते हैं। दुआओं से संबंधित जो तरीके

मैंने बताए थे छप कर प्रकाशित हो चुके हैं। लेकिन आप लोगों में से कई ऐसे भी होंगे जिन्हें आज मालूम हुआ होगा कि दुआ के बारे में भी मैंने कुछ बताया था। तो ज़िक्रे इलाही के बारे में बयान करने के लिए यह अवसर इसलिए मैंने चुना है कि इस मौके पर बयान करने से कई हज़ार व्यक्ति सुन लेगा और उन के द्वारा बात आगे निकल जाएगी।

ज़िक्रे इलाही के विषय का वितरण:

इस विषय में जो बातें मैं वर्णन करना चाहता हूँ वह ये हैं (1) ज़िक्रे इलाही या ज़िक्रुल्लाह से क्या मतलब है? ज़िक्रे इलाही की ज़रूरत क्या है? ज़िक्रे इलाही में क्या सावधानियां बरतनी आवश्यक हैं? ज़िक्रे इलाही के समझने में लोगों ने क्या ग़लतियाँ खाई हैं? जो लोग कहते हैं कि नमाज़ पढ़ते समय हमारा ध्यान स्थापित नहीं रहता और शैतान शंकाए डाल देता है उनके लिए शैतान को भगाने और ध्यान बनाए रखने के क्या उपाय और क्या साधन हैं?

ये वे भाग हैं इस विषय के जिन पर आज मैं अगर ख़ुदा तआला तौफ़ीक़ दे तो कुछ बयान करूँगा। इन बातों को सुनकर आप लोगों ने समझ लिया होगा कि यह इस प्रकार का विषय नहीं है। जो किसी विशेष प्रकार के लोगों से संबंध रखता है। बल्कि प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह छोटा हो या बड़ा, अमीर हो या ग़रीब, छोटा हो या बड़ा, प्रत्येक से सम्बन्धित है। क्योंकि जब आप इसे अनुभव में लाएंगे तो वह आप पर साबित हो जाएगा कि वह मामूली न थी। बल्कि बहुत महान परिणाम पैदा करने वाली थी।

ज़िक्रे इलाही किसे कहते हैं:

ज़िक्र के अर्थ हैं याद करने के। ज़िक्रुल्लाह के यह अर्थ हुए कि ख़ुदा तआला को याद करना। अत: अल्लाह तआला को याद करने के तरीके को ज़िक्रुल्लाह कहते हैं। अर्थात अल्लाह तआला की विशेषताओं को सामने रखना और उन्हें ज़बान से बार-बार याद करना और उन को दिल से स्वीकार करना और उसकी शक्तियों और कुदरतों को देखना ज़िक्रुल्लाह है।

विषय का महत्त्व:

यह विषय कितना महत्त्वपूर्ण और आवश्यक है। इसके बारे में थोड़े शब्दों में यह कहूंगा कि बड़ा ही महत्त्वपूर्ण है। शायद कोई विचार करे कि चूंकि इस पर मैंने लेक्चर देना शुरू किया है इसलिए इसे बड़ा महत्त्वपूर्ण कहता हूं। लेकिन मैं इसलिए नहीं कहता। बल्कि इसलिए कहता हूँ कि अल्लाह तआला ने इसे बड़ा कहा है। अत: क़ुरआन शरीफ में अल्लाह तआला फरमाता है -

وَ لَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ (अन्कबूत: 46) कि अल्लाह तआला का ज़िक्र सभी विषयों से बड़ा और सभी इबादतों से बढ़कर है। अत: जब अल्लाह तआला ने कह दिया है कि ज़िक्र सबसे बड़ा है। तो यह मेरा कथन नहीं बल्कि ख़ुदा तआला का है कि यह विषय सबसे बड़ा और महत्त्वपूर्ण है।

अब सवाल होता है कि अगर यह विषय सबसे बड़ा और प्रमुख है तो इस की तरफ सबसे अधिक ध्यान देने का आदेश भी चाहिए। इसके लिए जब हम क़ुरआन को देखते हैं। तो मालूम होता है कि बहुत अधिक इस ओर ध्यान दिलाया गया है कि लोग अल्लाह तआला के ज़िक्र की तरफ ध्यान दें। इसलिए अल्लाह तआला कहता है।

وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَّ اَصِيْلًا (अद्दहर: 46)

हे मेरे बन्दे ! अपने रब्ब को सुबह और शाम याद किया कर। फिर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमाते हैं कि जिस मज्लिस में अल्लाह तआला का ज़िक्र हो रहा हो। उसे चारों ओर से फरिश्ते घेर लेते और ख़ुदा की रहमत नाज़िल करते हैं। मैंने यह विषय इसलिए भी जलसा सालाना में वर्णन करने के लिए रखा कि जब कई हज़ार लोग दूर दराज़ से जमा होंगे तो उन सब के सामने बयान करूँगा ताकि सब पर फरिश्ते रहमत और बरकत नाज़िल करें। फिर वे लोग जब अपने घरों को जाएंगे तो यह बातें अपने साथ ले जाएंगे। और जो लोग यहाँ नहीं आए उन्हें सुना देंगे और ऐसे सारी जमाअत में बरकत फैल जाएगी।

अत: मैंने इस उद्देश्य के लिए भी आज का दिन इस विषय के बयान करने के लिए चुना। मैंने अभी बताया है कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमाते हैं कि जिस जलसा में ख़ुदा तआला का ज़िक्र हो रहा हो उस के आसपास फरिश्ते इकट्ठे हो जाते हैं और अल्लाह तआला की दया और बरकत लाकर बैठने वालों पर नाज़िल करते हैं। अत: जब ज़िक्रे इलाही एक ऐसी महान बात है कि सुनने के लिए फरिश्ते भी इकट्ठे हो जाते हैं और सुनने वालों पर रहमत नाज़िल करते हैं। तो समझ लेना चाहिए कि यह कैसी महत्त्वपूर्ण बात है और फिर जो फरिश्तों का उस्ताद होगा उसका वह कितना मान करेंगे। क्योंकि जो ज़िक्र करेगा उसके पास फरिश्ते हाज़िर होंगे और जितना अधिक करेगा उतने ही अधिक फरिश्ते आएंगे और उसे नेक कामों की तहरीकें करेंगे। फरिशतों का आना कोई काल्पनिक बात नहीं बल्कि यह सुनिश्चित है। मैंने ख़ुद फरिश्तों को देखा है और एक बार तो बहुत बेतकल्लुफ़ी से बातें भी की हैं। तो ज़िक्र करने वाले के पास फरिश्ते आते हैं और उसके साथ उनकी दोस्ती और संबंध हो जाता है। फिर ख़ुदा तआला कहता है-

يَآاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ

(अल मुनाफिकून: 10)

يَآاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا كَثِيْرًا ۝٤١ وَّ سَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّ اَصِيْلًا (अल्अहज़ाब: 41-42)

हे मोमिनो ! तुम को माल और औलाद अल्लाह तआला के ज़िक्र से न रोक दे। तुम अल्लाह तआला को याद करने में किसी बाधा की परवाह न करो और कोई काम तुम्हारा ऐसा न हो जिस को करते हुए अल्लाह तआला के ज़िक्र को छोड़ दो। अल्लाह तआला का ज़िक्र अत्याधिक करो और सुबह और शाम उसकी महिमा का वर्णन करो। इसी तरह रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमाते हैं और अबू मूसा अशअरी की रिवायत है-

مَثَلُ الَّذِىْ يَذْكُرُ رَبَّهٗ وَالَّذِىْ لَا يَذْكُرُهٗ مَثَلُ الْحَيِّ وَالْمَيِّتِ لَا يَقْعُدُ قَوْمٌ يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ اِلَّا حَفَّتْهُمُ الْمَلَائِكَةُ (बुख़ारी किताबुल दावात)

कि उस व्यक्ति का उदाहरण जो अल्लाह तआला का ज़िक्र करता है और जो नहीं करता ऐसा ही है जैसे जीवित और मुर्दा का है। अर्थात वह जो अल्लाह तआला का ज़िक्र करता है वह जीवित है और जो नहीं करता वह मुर्दा।

इससे मालूम हो सकता है कि ज़िक्रुल्लाह कितना महत्त्वपूर्ण और आवश्यक है। फिर तिर्मिज़ी में रिवायत है अबू दरदाअ कहते हैं कि

قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ أَلَا أُنَبِّئُكُمْ بِخَيْرِ أَعْمَالِكُمْ وَأَزْكَاهَا عِنْدَ مَلِيكِكُمْ، وَأَرْفَعِهَا فِيْ دَرَجَاتِكُمْ وَخَيْرٍ لَّكُمْ مِنْ إِنْفَاقِ الذَّهَبِ وَالْوَرِقِ وَخَيْرٍ لَّكُمْ مِنْ أَنْ تَلْقَوْا عَدُوَّكُمْ فَتَضْرِبُوا أَعْنَاقَهُمْ وَيَضْرِبُوا أَعْنَاقَكُمْ، قَالُوْا بَلٰى قَالَ ذِكْرُ اللّٰهِ (तिर्मिज़ी)

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा को संबोधित करके फरमाया कि मैं तुम्हें एक ऐसी बात न बताऊं जो सबसे बेहतर और सब से पसंदीदा हो और सोने तथा चांदी के खर्च करने से भी बेहतर हो और इससे बेहतर हो कि कोई जिहाद के लिए जाए दुश्मनों को कत्ल करे और ख़ुद भी शहीद हो जाए। सहाबा ने कहा फरमाइए आपने फरमाया वह अल्लाह का ज़िक्र है। एक दूसरी हदीस में आया है कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि ज़िक्रे इलाही का स्थान बहुत ऊंचा है। सहाबा ने कहा हे रसूलल्लाह क्या जिहाद से भी उसका स्थान ऊंचा है। आपने फरमाया। हाँ इससे भी बढ़कर वजह यह कि ज़िक्रे इलाही जिहाद की प्रेरणा देता है।

ज़िक्रे इलाही की तरफ ध्यान में कमी का कारण:

यह है कि ज़िक्रे इलाही का महत्त्व और ज़रूरत। लेकिन ज़िक्रे इलाही के कुछ हिस्से ऐसे हैं कि जिन की तरफ हमारी जमाअत का ध्यान नहीं और यदि है तो बहुत कम। मेरे स्वभाव में अल्लाह तआला ने बचपन से ही सोचने और विचार करने की आदत रखी है। मैं उस समय से कि मैंने होश संभाला है इस बात को सोचता रहा हूं और अब भी इसकी चिंता है कि हमारी

जमाअत में ज़िक्रुल्लाह की जो कमी है उसे दूर किया जाए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने दुआ पर बहुत बड़ा ज़ोर दिया है और अल्लाह तआला का शुक्र है कि हमारी जमाअत दुआ से बहुत काम लेती है इसी तरह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ज़िक्रे इलाही पर भी बहुत ज़ोर दिया लेकिन उसकी ओर जितना ध्यान देना चाहिए इस समय तक ऐसा नहीं किया गया। एक बहुत बड़ा कारण तो यह है कि अंग्रेज़ी शिक्षा ने कुछ विचार बदल दिए हैं और यूरोपीय शिक्षा के प्रभाव से लोग मानते हैं कि व्यर्थ ख़ुदा का नाम लेने से क्या लाभ हो सकता है। अगर कोई अलग बैठे कहता रहे कि ला इलाहा इल्लल्लाह या ख़ुदा कुद्दूस (पवित्र) है, अलीम है। ख़बीर है, कदीर है, ख़ालिक है, तो इससे क्या फायदा हो सकता है। कुछ नहीं इसलिए इस तरह करने की ज़रूरत नहीं। हमारी जमाअत के लोग भी चूंकि अंग्रेज़ी शिक्षा से शुग़ल रखते हैं इसलिए वह भी इस आशय के नीचे आ गए दूसरे हमारी जमाअत में वे लोग हैं जो ज़मींदार वर्ग से संबंध रखते हैं। ये लोग पहले ही न जानते थे कि ज़िक्रे इलाही क्या है और इसका क्या लाभ है इसलिए जब तक इन सभी को अच्छी तरह न बतलाया जाए और अच्छे तरीके से न समझा दिया जाए उस समय तक इस तरफ ध्यान नहीं कर सकते। यही कारण है कि इन में ज़िक्रुल्लाह कम है। नमाज़ भी ज़िक्रुल्लाह है जिस की हमारी जमाअत में ख़ुदा की कृपा से पूरी-पूरी पाबन्दी की जाती है मगर इसके सिवा और भी ज़िक्रुल्लाह हैं जिनका होना आवश्यक और अनिवार्य है। उनके बारे में यद्यपि मैं यह तो नहीं कह सकता कि वह हमारी जमाअत में हैं ही नहीं लेकिन यह ज़रूर कहूंगा कि कम हैं। कुछ अधिक लोग उन पर अमल नहीं करते और यह भी बहुत बड़ी कमी है। देखो अगर किसी की शक्ल सुंदर हो लेकिन उसकी आंख या कान या नाक ख़राब हो तो क्या उसे सुंदर कहा जाएगा। हरगिज़ नहीं। बल्कि उसे सब लोग बुरी शक्ल वाला ही कहेंगे। इस तरह अगर हमारी जमाअत के कुछ लोग ज़िक्रुल्लाह के कुछ तरीके को अमल में नहीं लाते तो उनका ऐसा ही उदाहरण है जैसा कि एक व्यक्ति ने बड़ा कीमती वस्त्र, कोट, कमीज़, सदरी और पाजामा पहना हो लेकिन पांव में जूता न हो या सिर पर पगड़ी न हो। यद्यपि उसका सारा परिधान अच्छा होगा लेकिन एक पगड़ी या

जूते के न होने से उस में कमी होगी और उच्च स्तर के लोग पसंद नहीं करते कि उनकी किसी बात में कमी हो। अत: जब सभी तरीकों से ज़िक्रुल्लाह न करना एक त्रुटि है ।

और फिर जब हम यह भी साबित कर देंगे कि नमाज़ के अलावा कुछ अन्य तरीकों से भी ज़िक्रुल्लाह करने का भी ख़ुदा तआला ने आदेश दिया है चाहे उनकी हिक्मत किसी की समझ में आए या न आए और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी फरमाया है तो ज़रूरी है कि आध्यात्मिकता की चरमोत्कर्ष प्राप्ति पाने के लिए इन तरीकों पर भी अमल किया जाए। हमारी जमाअत में नफ्लों की अदायगी की ओर पूरा ध्यान न होने की यह भी वजह है कि इन लोगों ने ज़िक्रुल्लाह के इस तरीका ज़िक्र के लाभों कोसमझा नहीं। वे फर्ज़ों को अदा करके समझ लेते हैं कि हम ने काम पूरा कर लिया। हालांकि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमाते हैं और ख़ुद नहीं फरमाते बल्कि यह कहते हैं कि अल्लाह तआला ने मुझे कहा है कि-

لَا يَزَالُ عَبْدِیْ يَتَقَرَّبُ اِلَیَّ بِالنَّوَافِلِ... فَكُنْتُ سَمْعَهُ الَّذِیْ يَسْمَعُ بِهٖ وَبَصَرَهُ الَّذِیْ يُبْصِرُ بِهٖ وَيَدَهُ الَّتِیْ يَبْطِشُ بِهَا وَرِجْلَهُ الَّتِیْ يَمْشِیْ بِهَا۔ (बुख़ारी किताबुल रिक़ाक)

अल्लाह तआला फरमाता है कि नफ्लों के द्वारा मेरा बंदा मुझ से इतना करीब हो जाता है कि मैं उस के कान बन जाता हूं जिस से कि वह सुनता है और मैं उसकी आँखें हो जाता हूं जिस से कि वह देखता है और मैं उसके हाथ हो जाता हूं जिस से कि वह पकड़ता और मैं उसके पांव हो जाता हूं जिस से कि वह चलता है।

इससे आप लोग समझ सकते हैं कि अल्लाह तआला ने नफ्लों का कितना बड़ा दर्जा रखा है और नफ्ल पढ़ने वाले के लिए कितना बड़ा स्थान करार दिया है। मानो उनके द्वारा अल्लाह तआला मनुष्य को इस सीमा तक पहुंचा देता है कि इंसान अल्लाह तआला के गुण अपने अंदर ले लेता है।

अत: नफ्ल कोई मामूली बात नहीं है। मगर अफसोस कि कई लोग उनकी ओर ध्यान नहीं करते। मूल बात यह है कि इंसान में कमज़ोरी और सुस्ती है इसलिए वह कम से कम इबादत को अमल में लाना चाहता है। यही कारण है कि अल्लाह तआला जो अपने बन्दों की कमज़ोरियों से परिचित और उन पर बहुत बड़ा दयालु है उसने कुछ तो फर्ज़ निर्धारित कर दिए हैं और कुछ नफ़्ल। फर्ज़ तो इसलिए कि अगर कोई व्यक्ति उन्हें पूरा कर लेगा तो उस पर कोई आरोप नहीं आएगा। अत: हदीस में आता है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास एक व्यक्ति आया और उसने आकर इस्लाम के बारे में पूछा आपने फ़रमाया:

خَمْسُ صَلَوَاتٍ فِي الْيَوْمِ وَاللَّيْلَةِ فَقَالَ هَلْ عَلَيَّ غَيْرُهَا قَالَ لَا إِلَّا اَنْ تَطَوَّعَ فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَصِيَامُ رَمَضَانَ قَالَ هَلْ عَلَيَّ غَيْرُهُ قَالَ لَا إِلَّا اَنْ تَطَوَّعَ قَالَ وَذَكَرَ لَهُ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الزَّكٰوةَ قَالَ هَلْ عَلَيَّ غَيْرُهَا قَالَ لَا إِلَّا اَنْ تَطَوَّعَ قَالَ فَاَدْبَرَ الرَّجُلُ وَهُوَ يَقُوْلُ وَاللّٰهِ لَا اَزِيْدُ عَلٰى هٰذَا وَلَا اَنْقُصُ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَفْلَحَ اِنْ صَدَقَ

(बुख़ारी किताबुल ईमान बाबुज़्ज़कात मिनल इस्लाम)

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे कहा कि दिन रात में पाँच नमाज़ें हैं। उसने कहा क्या इनके अतिरिक्त और भी हैं। रसूल करीम ने फरमाया नहीं। लेकिन यदि तू नफ्ल के रूप में पढ़े। फिर रसूले करीम ने फरमया, रमज़ान के रोज़े। उस ने कहा क्या इनके अतिरिक्त और भी हैं। रसूले करीम ने फरमाया, नहीं। लेकिन यदि तू नफ्ल के रूप में पढ़े। फिर रसूले करीम ने फरमाया। इस्लाम में ज़कात भी फर्ज़ है। उसने कहा क्या इसके अतिरिक्त और भी है आपने फ़रमाया नहीं। लेकिन जो तू नफिल के रूप में दे। यह सुनकर वह व्यक्ति यह कहता हुआ चला गया कि ख़ुदा की क़सम! मैं इस में अधिकता करूंगा न कमी। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यह व्यक्ति सफल हो गया अगर उस ने सच

कहा है।

इससे पता चलता है कि जो व्यक्ति फर्ज़ों को पूरी तरह अदा कर ले वह सफल हो जाता है मगर सावधान और दूरदृष्टि रखने वाला इंसान केवल फर्ज़ों की अदायगी करने पर ही नहीं रहता बल्कि वह नफ्लों में भी कदम रखता है ताकि अगर फर्ज़ों के अदा होने में कोई कमी रह गई हो तो वह इस तरह पूरी हो जाए। जैसे दिन-रात में पाँच नमाज़ें अदा करना अनिवार्य है। एक ऐसा व्यक्ति जो यह नमाज़ें तो अदा करता है लेकिन नफ्ल नहीं पढ़ता, संभव है कि उसकी एक नमाज़ ऐसी अदा हुई हो जो उसकी किसी ग़लती की वजह से रद्द हो गई हो और क़यामत के दिन उसे उसका बदला भुगतना पड़ेगा। अत: हदीस में आता है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक बार मस्जिद में बैठे थे कि एक व्यक्ति ने आ कर नमाज़ पढ़ी आप ने उसे फरमाया फिर पढ़ो उसने फिर पढ़ी। आप ने फरमाया फिर पढ़ो उसने फिर पढ़ी तीसरी बार आपने फ़रमाया फिर पढ़ो उसने फिर पढ़ी है। जब आप ने चौथी बार उसे पढ़ने के लिए कहा तो उस ने कहा हे अल्लाह के रसूल ख़ुदा की क़सम इस से अधिक मुझे नमाज़ नहीं आती आप बताएँ कैसे पढ़ूँ। आप ने फरमाया तुम ने जल्दी नमाज़ पढ़ी है इसलिए स्वीकार नहीं हुई धीरे धारे पढ़ो। (बुख़ारी)

तो कभी कभी ऐसी त्रुटि हो जाती हैं जिनकी वजह से नमाज़ स्वीकार नहीं होती परन्तु वह व्यक्ति जो फर्ज़ नमाज़ के साथ नफ्ल भी अदा करता है कि अगर उस की कोई नमाज़ स्वीकार न हो तो नफ्ल उसे काम दे सकेंगे और उस कमी को पूरा कर देंगे। उसका ऐसा ही उदाहरण है कि कोई व्यक्ति ऐसी परीक्षा देने के लिए जाए जिसमें पास होने के लिए केवल पचास नंबर पाने की शर्त हो और वे जाकर इतने सवाल हल कर आए जिनके पचास ही नंबर हों और विश्वास कर ले कि मैं पास हो जाऊंगा। यह उस की ग़लती होगी क्योंकि सम्भव है कि उस का कोई प्रश्न ग़लत निकल आए और उसे पूरे पचास नंबर प्राप्त न हो सकें और वह फेल हो जाए इसीलिए जो होशियार और बुद्धिमान छात्र होते हैं वे ऐसा नहीं करते बल्कि उन्हें जो सवाल आते

हों वे भी और जो न आते हों वे भी सारे के सारे हल कर के आते हैं कि शायद सब के नंबर मिल मिला कर पास हो सकें। फिर यदि कोई सफर में चले और अनुमान कर ले कि मुझे इतना खर्च पर्याप्त होगा और उतना ही साथ ले तो कभी कभी ऐसा भी होता है कि उसका अंदाज़ा ग़लत निकलता है और उसे सख्त परेशानी उठानी पड़ती है। इसलिए सावधान और बुद्धिमान लोग अनुमान से कुछ अधिक लेकर चलते हैं ताकि संयोग से खर्च के समय कष्ट न हो। तो नफ्ल संयोगिक से खर्च की तरह होते हैं और निहायत ज़रूरी हैं इसलिए उन्हें अदा करने की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए।

दूसरा कारण हमारी जमाअत के लोगों का ज़िक्रे इलाही की तरफ पूरा ध्यान न करने का यह है कि हज़रत मसीह मौऊद ने उन तथाकथित सूफ़ियों के रद्द में जो इस ज़माने में पैदा हो गए और जिन्होंने विभिन्न प्रकार की बिदअतें फैला रखी हैं, बहुत कुछ लिखा है और उन्हें संबोधित करके कहा है कि तुम्हारे तोते की तरह वज़ीफे पढ़ने का कुछ परिणाम नहीं निकल सकता। तुम मुसल्लों पर बैठे क्या कर रहे हो, जबकि इस्लाम में चारों ओर से हमले हो रहे हैं तुम क्यों उठकर जवाब नहीं देते। इस तरीके से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उन लोगों की निंदा की है और वास्तव में ये लोग निंदा के ही योग्य थे। लेकिन कुछ लोगों ने इस से यह ग़लती खाई है कि उन्होंने समझ लिया है कि शायद बैठकर अल्लाह तआला का ज़िक्र करना ही लग़्व कार्य है हालांकि इस तरह ज़िक्र करना लग़्व नहीं है बल्कि इसका तो उद्देश्य यह है कि ख़ुदा की पवित्रिता और प्रशंसा बयान हो लेकिन वे लोग चूँकि केवल घरों में बैठकर तो अल्लाह तआला का ज़िक्र करते थे और बाहर निकल कर जहां कि अल्लाह तआला की निंदा हो रही थी कुछ नहीं करते थे इसलिए उन्हें हज़रत मसीह मौऊद ने डांटा है और फरमाया है कि अगर तुम लोग वास्तव में अल्लाह तआला से प्रेम रखते हो उसकी पवित्रता और प्रशंसा वर्णन करते हो तो जिस तरह घरों में बैठ कर उसकी प्रशंसा वर्णन करते और उसकी स्तुति करते हो उसी तरह घरों से बाहर निकल कर भी करो। चूंकि उन्होंने सुस्ती और आलस्य की वजह से बाहर निकल कर नेकी का आदेश

और बुराइयों से रोकना छोड़ दिया था इसलिए उन्हें डांटा गया है कि यह तो पाखंड है। क्योंकि अगर तुम्हारे मन में अल्लाह तआला से सच्चा प्यार और इश्क होता तो क्या कारण है कि जब विरोधी अल्लाह तआला पर ऐतराज़ करते हैं तब तुम बाहर निकल कर उन को दूर नहीं करते और क्या कारण है कि जिस तरह से तुम लोग एकान्त में बैठ कर ख़ुदा तआला की पवित्रता बयान करते हो इसी तरह सार्वजनिक स्टेजों पर नहीं करते।

वर्तमान सूफ़ियों का ज़िक्रे इलाही:

फिर उन्हें डाँटने का यह भी कारण हुआ कि "हर के गीर वो इल्लते शवद" के अनुसार ज़िक्रुल्लाह को उन सूफ़ियों और गद्दी नशीनों ने ऐसे रंग में इस्तेमाल किया कि बिगाड़ कर कुछ का कुछ बना दिया और इस्लाम ने जिस रंग में पेश किया था उसका नामो निशान भी शेष न रहने दिया। अब ज़िक्रुल्लाह क्या है कि दिल से आवाज़ निकालकर सिर तक ले जाई जाए और ज़ोर से चीख़ा जाए कि सारे मोहल्ले का आराम हराम कर दिया जाए और आसपास के सभी लोगों की इबादत ख़राब कर दी जाए। इस को वे दिल पर चोट लगाना कहते हैं। मानो उनके निकट दिल एक ऐसी चीज़ है जिस में ला इलाहा इल्लल्लाह को ज़ोर से घुसेड़ा जाता है इसी तरह कुछ ने यह तरीका बना रखा है कि शे'र सुनते और कव्वालियाँ कराते और कंचनियाँ नचाते हैं और कहते हैं कि यह ज़िक्रे इलाही की मज्लिस गर्म हो रही है। फिर दिल बहलाते हैं कि इसमें अल्लाह अल्लाह की आवाज़ आए। अत: अजीब अजीब बातें बना ली गई। कहीं दिल बहलाए जाते हैं कहीं दिल पर चोट लगाई जाती है कहीं रूह से आवाज़ निकालने की कोशिश की जाती है और ये सब नाम उन्होंने स्वंय ही रख लिए हैं। कभी कहते हैं कि हम दिल से ज़िक्र बुलंद करते हैं और वह अर्श पर सिज्दा करके वापस आता है कभी कहते हैं कि हम शरीर के हर अंग से अल्लाह अल्लाह की आवाज़ निकालते हैं। यह और इसी प्रकार की और बहुत सी बिदअतें(नई नई बातें) उन्होंने गढ़ ली हैं। कुछ ऐसे भी हैं जो क़ुरआन करीम की कोई आयत पढ़ते और नाचते हैं और कुछ ऐसे भी हैं जो ऐसे ज़िक्र करते हैं कि

एक आदमी कुछ शे'र पढ़ता है और दूसरे नाचते हैं और कहते हैं कि वज्द आ गया और बेहोशी छा गई। फिर जलसा में बैठे-बैठे अचानक बहुत ज़ोर से अल्लाह अल्लाह कह कर कूद पड़ते हैं। तो इस तरह के अजीब अजीब ज़िक्र निकाले गए हैं। हालांकि इन को इस्लाम धर्म से कोई मतलब नहीं है लेकिन इससे यह नहीं कहा जा सकता कि ज़िक्रे इलाही कोई बुरी बात है हाँ यह कहना चाहिए कि ये बिदअतें जो इन लोगों ने पैदा कर ली हैं ये बुरी हैं। लेकिन इन लोगों को कुछ परवाह नहीं है हालांकि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमाते हैं-

كُلُّ بِدْعَةٍ ضَلَالَةٌ وَ كُلُّ ضَلَالَةٍ فِي النَّار

(निसाई किताब सलातुल ईदैन)

प्रत्येक नई बात जो धर्म में पैदा की जाए हो वह गुमराही है और प्रत्येक गुमराही जहन्नुम में ले जाती है यही कारण है कि उन लोगों के बनाए हुए ज़िक्र ख़ुदा तआला के करीब ले जाने वाले नहीं बल्कि बहुत दूर कर देने वाले हैं। अत: जब से इस प्रकार के ज़िक्र निकले हैं तभी से मुसलमान अल्लाह तआला से दूर होते जा रहे हैं। अत: ये सब बातें बिदअत (नए नए आडम्बर) हैं और जब अल्लाह तआला और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बताई हुई बातों के ख़िलाफ किया जाएगा तो ज़रूर है कि उस से रूहानियत कमज़ोर हो। इसलिए मुसलमानों से रूहानियत मिट रही है। दूसरे यह कि इन बिदअतों में एक बात यह है जिसकी वजह से देखने में तो आन्नद और मज़ा लगता है परन्तु चूँकि वे सारा आन्नद और मज़ा बनावटी होता है इसलिए असली आनन्द से अन्जान होकर जो बनावटी के पीछे लग जाता है वह हलाक हो जाता है। इसका उदाहरण ऐसा ही है कि एक व्यक्ति के पेट में दर्द हो लेकिन वह बजाय इस के कि उसका इलाज करे अफीम खाकर सो जाए। इसका अस्थायी परिणाम तो यह निकलेगा कि बेहोश हो जाने के कारण उसे आराम महसूस होगा लेकिन दरअसल वह मर रहा होगा तथा एक समय आएगा जबकि वही दर्द इस को हलाक कर देगा।

असल बात यह है कि आजकल जिस का नाम लोगों ने ज़िक्र रखा हुआ है वह एक विद्या है जिसे "इल्मे तिर्ब" कहते हैं और अंग्रेजी में मिस्मरेज़म।

एक दूसरी विद्या भी है जिस का नाम हेपनाटिज़म है जो फ्रांस के एक डॉक्टर ने ईजाद किया है। इसका अध्यात्म से कोई संबंध नहीं होता बल्कि विचार से सम्बन्ध रखता है और ख़ुदा तआला ने विचार में एक ऐसी शक्ति रखी है कि जब विशेष रूप से इसे एक ओर आकर्षित किया जाता है तो उसमें एक विशेष प्रभाव पैदा हो जाता है और उसके द्वारा दिल में ख़ुशी और आन्नद भी पैदा किया जा सकता है लेकिन वह आन्नद ऐसा ही होता है जैसे कि अफीम, कोकीन, या भांग पीकर प्राप्त होता है हालांकि दरअसल वह आन्नद नहीं होता बल्कि स्वास्थ्य ख़राब कर देने वाली बेहोशी होती है इसी तरह जब विचारों को जमा कर के अंगों पर प्रभाव डाला जाता है तो एक प्रकार की तन्द्रा छा जाती है जिस से सुख महसूस होता है। और ये लोग समझते हैं कि अल्लाह अल्लाह कहने कि लज़्ज़त है हालांकि इस समय अगर वह राम राम भी कहें तो वैसी ही ख़ुशी महसूस हो। लिखा है कि एक बुज़ुर्ग नाव में बैठे कहीं जा रहे थे उन्होंने ज़िक्र करना शुरू किया और ऐसे ज़ोर से किया कि दूसरे लोग जो हिन्दू थे वे भी अल्लाह अल्लाह करने लग गए। लेकिन वहीं एक हिंदू साधू बैठा था। उसकी ज़बान पर अल्लाह अल्लाह जारी न हुआ। वह उस पर अपना विशेष ध्यान डालने लगे। मगर डाल ही रहे थे कि उनके मुंह से अपने आप राम-राम निकलना शुरू हो गया। क्योंकि उस साधु ने उन पर राम राम जारी करने का ध्यान डालना शुरू कर दिया। यह देखकर वह बड़े हैरान हुए और उसी दिन से इस तरह के ज़िक्र करने से तौबा की क्योंकि उन्हें मालूम हो गया कि यह एक ज्ञान है न कि ज़िक्र का प्रभाव। क्योंकि यदि अल्लाह कहने का ही यह प्रभाव होता है कि दूसरों की ज़बान से भी अपने आप जारी हो जाता तो फिर राम राम क्यों जारी होता। तो उन लोगों की हालत ऐसी ही होती है कि कोई व्यक्ति युद्ध में जा रहा हो और सख्त भूखा हो कि उसे एक थैली मिल जाए जिस में दाने समझ कर ख़ुश हो रहा हो लेकिन उसमें कंकड़ियां पड़ी हों। यही स्थिति उस आदमी की है जो इस प्रकार के तरीकों पर चलता है समझता है कि अल्लाह तआला की नज़दीकी पा रहा हूं। हालांकि वास्तव में एक नशा होता जिस में वह डूबा हो जाता है यही कारण है कि बावजूद इसके कि वह समझता है कि विशेष स्थान पर पहुँच गया

हूं लेकिन उसका दिल वैसे का वैसा ही गंदा और अशुद्ध होता है जैसा कि पहले था। तो यह अफीम आदि की तरह एक नशा होता है हमारी जमाअत के एक श्रद्धालु हमेशा मुझे कहा करते थे कि इस तरह करने से बड़ा मज़ा आता है मैं उन को भी कहता कि जिस तरह अफीम और कोकीन से मज़ा आता उसी तरह इससे भी आता है। इस का सबूत यह है कि ऐसे ज़िक्रों से रूहानी सफाई नहीं होती बल्कि वे जो कहते हैं कि हमारा ज़िक्र अर्श तक पहुँचता है उनमें भी रूहानी सफाई नहीं होती। इस पर उन्होंने सुनाया कि यह बात बिल्कुल सही है। एक व्यक्ति था जो कहता था कि मैंने सभी दर्जे पार कर लिए हैं लेकिन बावजूद इसके लोगों से अनाज और दाने मांगता फिरता था। मैं उस के बारे में विचार करता था कि जब उस स्थान पर पहुंचा हुआ है तो क्यों लोगों के सामने मांगने के लिए हाथ फैलाता है।

लालची पीर का किस्सा:

हज़रत मसीह मौऊद एक व्यक्ति के बारे में फरमाते हैं कि वह अपने आप को विशेष दर्जे तक पहुंचा हुआ समझता था लेकिन एक बार एक मुरीद के यहाँ गया और जाकर कहा। लाओ मेरा टैक्स (यानी भेंट)। अकाल का मौसम था। मुरीद ने कहा कुछ नहीं है, माफ कीजिए। पीर साहिब बहुत देर तक लड़ते झगड़ते रहे और आख़िर कोई चीज़ पकवाई और रूपया लेकर पीछा छोड़ा। तो इस प्रकार की कमज़ोरियां और गन्द उन लोगों में देखा जाता है जो बड़े बड़े दावे करते हैं।

बात यह है कि ख़ुदा तआला ने मनुष्य की आवाज़ और विचार में भी एक प्रकार का प्रभाव रखा है। जैसे यदि इंसान हर समय किसी बात के बारे में सोचता है कि ऐसा हो गया तो उसके विचार में उसी प्रकार नक्शा खिंच जाता है। इसी तरह जब कोई व्यक्ति यह विचार कर लेता है कि मेरे दिल से अल्लाह अल्लाह निकल रहा है तो बैठे बैठे वह इस प्रकार की आवाज़ सुनना शुरू कर देता है कि मानो उसका दिल ही बोल रहा है, हालांकि अगर वास्तव में उसका दिल ही बोलता है तो फिर क्या कारण है कि पवित्र नहीं हो जाता। फिर हिंदुओं में मुसलमानों की तुलना में भी अधिक लोग ऐसे पाए जाते हैं जो न केवल अपना ही दिल हिलाते हैं बल्कि दूसरों के दिलों को भी

हिला लेते हैं।

मेरा इरादा है कि इस के संबंध में एक पुस्तक लिखूं और बताऊं कि नबियों और कलाकारों (नटों) में क्या अंतर होता है। यह एक मामूली ज्ञान है लेकिन इसका नतीजा यह होता है कि इंसान अपने सुधार से लापरवाह हो जाता है क्योंकि वह समझने लग जाता है कि मैं ख़ुदा तआला तक पहुँच गया हूँ हालांकि वह नहीं पहुंचा होता। यदि कोई व्यक्ति किसी स्थान पर पहुँचना चाहे और किसी और ही जगह पहुंचकर समझ ले कि जहाँ मुझे जाना था वहाँ पहुँच गया हूँ तो वहीं बैठ जाएगा। जिस का नतीजा यह होगा कि भारी नुकसान उठाएगा। इसी तरह इस प्रकार के कर्म करने वाले भी ग़लती से यह समझ लेते हैं कि हम मूल स्थान पर पहुँच गए हैं हालांकि उससे कोसों दूर होते हैं और एक अफीम की तरह नशे में पड़े होते हैं।

अत: इस प्रकार के ज़िक्र और अज़कार लग़्व थे जिनसे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने रोका और उनके करने वालों की निंदा की है। क्योंकि जब हिंदू ईसाई भी यही बात कर सकते हैं तो यह ज़िक्रुल्लाह कैसे कहला सकते हैं।

बाकी रहा ऊंची आवाज़ से ज़िक्र करना या राग आदि सुनना। अत: मैंने बताया है कि व्यक्ति के अंगों में एक विशेष शक्ति रखी गई है। प्रभाव स्वीकार करने और प्रभाव पहुंचाने का और अंगों पर प्रभाव जिन दरवाजों से होता है उन में से एक कान भी है जो अच्छी आवाज़ से प्रभावित होते हैं। इंसान तो इंसान जानवर भी अच्छी आवाज़ से प्रभावित होते हैं। जैसे सांप के सामने बीन बजाई जाए तो वह लोटने लगता है लेकिन क्या यह समझा जा सकता है कि उस पर रूहानियत का कोई प्रभाव हुआ है, कदापि नहीं। इसी तरह अगर गाना सुनने से कोई नाचने लगता है तो यह नहीं कहा जा सकता कि उसकी रूहानयित पर असर हुआ। बल्कि यह कि उसकी वेदनाओं ने एक ऐसा प्रभाव स्वीकार किया है जिस का अध्यात्म से कोई संबंध नहीं है। अत: अगर कोई व्यक्ति गाने आदि को आध्यात्मिकता पर असर डालने वाला समझता है तो यह उसकी ग़लती है और नादानी है। क्योंकि जिस तरह एक सांप बीन पर मस्त होता है उसी तरह

गाने और बजाने पर आजकल सूफी नाचते हैं। फिर यह एक बिदअत है कि ऊंची और बुलन्द आवाज़ से कोई ज़िक्र किया जाए। एक बार रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जा रहे थे कि चलते चलते सहाबा ने ज़ोर से कहा। अल्लाहो अकबर अल्लाहो अकबर इस पर आप ने फरमाया-

اِرْبَعُوْا عَلٰى اَنْفُسِكُمْ فَاِنَّكُمْ لَا تَدْعُوْنَ اَصَمَّ وَلَا غَائِبًا اِنَّهٗ
مَعَكُمْ اِنَّهٗ سَمِيْعٌ قَرِيْبٌ (बुख़ारी किताबुल जिहाद)

अबू मूसा कहते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें फरमाया तुम लोग अपने आप पर रहम करो। धीरे धीरे क्यों नहीं कहते जिसे तुम पुकारते हो वह न बहरा है और न ग़ायब बल्कि वह ख़ूब सुनता है और तुम्हारे करीब और तुम्हारे साथ है।

लेकिन आजकल के सूफ़ियों को देखो जहां उनकी ज़िक्र की मज्लिस हो वह मोहल्ला गूंज उठता है और उसे वह बड़ा नेकी का काम समझते हैं हालांकि शरीयत के ख़िलाफ हो रहा होता है फिर शे'रों तथा संगीत के साथ ज़िक्र पर नृत्य और आन्नद, चीख़ मारना, ऊंची आवाज़ से ज़िक्र करना, सिर हिलाना, आदि कोई बात भी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से साबित नहीं। कहा जाता है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी शे'र सुनते थे लेकिन यह कहीं साबित नहीं हुआ कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शे'र, ज़िक्रे इलाही के रूप में सुना करते थे। आप का शे'र सुनना ऐसे होता था कि हस्सान आए और आकर कहा हे रसूलल्लाह अमुक काफ़िर ने आप के खिलाफ शे'र कहे हैं और मैंने उनका जवाब लिखा है। आप उसे सुन लेते या यह कि एक व्यक्ति के कत्ल का आपने आदेश दिया था उसने अनुमति लेकर ऐसे शे'र पढ़े जिनमें अपनी जान बख्शने की इस तरह मांग कर दी कि जब मैं आपके पास आने लगा तो लोगों ने मुझे कहा कि रसूलुल्लाह ने तेरे कत्ल का आदेश दिया है और वह तुझे कत्ल करवा देंगे। लेकिन मैंने उस पर भरोसा नहीं किया और समझा कि जब उनके पास जा रहा हूं और जाकर माफी मांग लूंगा तो क्या फिर भी मारा जाऊंगा। यह

सुनकर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस पर अपनी चादर डाल दी कि कोई उसे कत्ल न कर सके। इस के बाद उसने कहा कि मुझे अपनी जान का डर नहीं था कि मैंने इस तरह माफी मांगी है, बल्कि यह डर था कि मैं इस कुफ्र की हालत में ही कत्ल न कर दिया जाऊं क्योंकि मैंने समझ लिया है कि इस्लाम सच्चा धर्म है। तो रसूले करीम इस प्रकार के शे'र सुनते थे। लेकिन इससे यह कहां साबित हो गया कि आप के सामने कव्वालियाँ पढ़ी जाती थीं या नाचा जाता था या इलाही मुहब्बत के शे'र पढ़े जाते और उस पर सहाबा नृत्य करते थे और उन पर बेहोशी छा जाती थी। अतः आजकल जो कुछ किया जाता है यह सब बिदअत है जो आमतौर पर फैल गई है। फिर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस तरह शेर सुनते थे कि काफिरों से युद्ध हो रहा है एक सहाबी जोश दिलाने के लिए कहता है कि आज या तो हम विजयी होंगे या जान दे देंगे मगर पीछे नहीं हटेंगे। अतः यह दलील कि रसूले करीम शेर सुनते थे इसलिए हम भी सुनते हैं बिल्कुल ग़लत और बेहूदा है। फिर शे'र सुनकर जितनी हरकतें की जाती हैं वे सब की सब शरीयत के ख़िलाफ हैं इस्लाम में इन का कोई पता नहीं चलता।

ज़िक्रे इलाही करते समय की पाँच स्थितियाँ क़ुरआन से

इन के विपरीत क़ुरआन करीम से जो ज़िक्रे इलाही करने की अवस्था मालूम होती है उस में यह कहीं नहीं है कि ज़िक्र इलाही करते समय बेहोशी छा जाती है और मुर्छा छा जाती है या सुनने वाले सिर मारना और उछलना शुरू कर देते हैं। बल्कि ज़िक्रे इलाही के संबंध में अल्लाह तआला फरमाता है कि

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ (अनफाल: 4)

फिर फरमाता है-

تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُوْدُ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ۚ ثُمَّ تَلِيْنُ جُلُوْدُهُمْ وَ قُلُوْبُهُمْ اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ (अल्ज़ुमर: 24)

फिर कहता है

اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُ الرَّحْمٰنِ خَرُّوْا سُجَّدًا وَّ بُكِيًّا (मरियम: 59)

ज़िक्रे इलाही करने वालों की ये अवस्थाएं होती हैं। (1) मोमिन जब ज़िक्रुल्लाह करते हैं उनके दिल डर जाते और उनमें भय पैदा हो जाता है। क्योंकि वह समझते हैं कि हमारा रब्ब बड़ी शान वाला और शौकत वाला है (2) इक्शिरार हो जाता अर्थात डर से उनके बाल खड़े जाते हैं। (3) कि उनके बदन ढीले पड़ जाते हैं और दिल नरम हो जाते हैं। (4) वह सिज्दा में गिर जाते हैं। अर्थात इबादत में व्यस्त हो जाते हैं। (5) रोने लग जाते हैं। यह पाँच अवस्थाऐं हैं जो अल्लाह तआला ने बताई हैं। अगर नाचना कूद बेहोश होना और ज़ोर- ज़ोर से चीखना भी होता तो अल्लाह तआला उन्हें भी बयान करता और फरमा देता कि मोमिन वे होते हैं कि जब उनके सामने अल्लाह तआला का ज़िक्र किया जाए तो अपने कपड़े फाड़कर परे फेंक देते हैं और कूदने शोर मचाने लग जाते हैं। या उल्टे लटक कर सिर हिलाना और हाल (घूमना) शुरू कर देते हैं। लेकिन अल्लाह तआला तो इनमें से कोई एक बात भी बयान नहीं की। इससे मालूम हुआ कि इनका ज़िक्रे इलाही से कोई संबंध ही नहीं है।

अल्लाह तआला का कलाम भी कैसा हिक्मत से परिपूर्ण है कि उस ने इस प्रकार की सभी हरकतों का अपने कलाम में पहले से ही रद्द कर दिया है। कोई कह सकता था कि अगर यह अवस्थाएं क़ुरआन ने नहीं बयान कीं तो न सही जो बयान की हैं यह उनके अतिरिक्त हैं। प्रथम तो यह कहना ही नादानी है लेकिन जब हम क़ुरआन की इन आयतों को देखते हैं जिनमें ज़िक्रे इलाही के समय की अवस्था बताई गई है। तो मालूम होता है कि अल्लाह तआला ने उनमें ऐसे शब्द रख दिए हैं जो इन सभी बातों को रद्द कर देते जिन को आजकल वैध और जायज़ करार दिया जाता देखिए इन आयतों में "वजलुन" "इक्शिअरारुन" "तलीनुन" "जलूदुन" के शब्द आए हैं और शब्दकोश के देखने से मालूम होता है कि "वजलुन" के एक अर्थ नर्मी और घुसने के हैं और यह आराम को प्रकट करता है। परन्तु आजकल के सूफी हरकत शुरू कर देते हैं जो इसके ख़िलाफ है। फिर "इक्शिअरारुन" बालों के अचानक डर से खड़े होने को कहते हैं यह

भी आराम चाहता है, क्योंकि अचानक डर से आदमी खड़े का खड़ा रह जाता है न कि हरकत करना शुरू कर देता है। इसी तरह से "तलीनुन" "जलूदुन" भी आराम की तरफ इशारा करता है। हरकत के लिए अरबी में तरब का शब्द है कि ख़ुशी के मारे उछलने कूदने को कहते हैं और क़ुरआन में ज़िक्रे इलाही के मौके पर यह शब्द कहीं नहीं आया और शब्दकोश वाले लिखते हैं कि तरब विनम्रता और विनय के ख़िलाफ है। इधर क़ुरआन बताता है कि ज़िक्रुल्लाह करने का परिणाम विनम्रता और विनय है। अत: मालूम हुआ कि ऐसे अवसर पर "तरब" नहीं हो सकता। क्योंकि "तरब" विनम्रता और विनय के विपरीत में आता है। इसलिए नाचना कूदना और उछलना जो तरब है कभी ज़िक्रुल्लाह का परिणाम नहीं पैदा हो सकता बल्कि इसके परिणाम में तो रोना और इबादत करना और डरना होता है और यही होना भी चाहिए। क्योंकि इस्लाम बुद्धि और होश स्थापित करने वाला और सीधे रास्ते पर चलाने वाला है न कि बेहोश और नादान बनाने वाला। लेकिन कूदना उछलना और शोर मचाना बेहोशी और कम अक़्ली के कारण होते हैं इसलिए यह इस्लाम की शिक्षा नहीं हो सकती। इसी तरह बेहोशी का छा जाना भी कोई पसंदीदा बात नहीं। यही कारण है कि इस्लाम ने यह तो वैध रखा है कि अगर किसी का कोई प्रिय मर तो उस पर रोए मगर यह वैध नहीं रखा कि वह चीख़ पुकार करे और बेहोश होता चला जाए। इसलिए रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक महिला को जो अपने बच्चे की क़ब्र पर बेसब्री की हरकतें करती थी फरमाया सब्र करो। उसने कहा, यदि तेरा बच्चा मरता तो तुझे पता लगता कि कैसे धैर्य किया जाता है। (अबू दाऊद किताबुल जनायज़) यह उस ने अपनी नादानी से कहा वरना आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कई बच्चे मर चुके थे। तो शोर और बेहोशी परिणाम होता है बेसब्री और निराशा का या दिल के कमज़ोर होने का। अगर दिल के कमज़ोर होने के कारण हो तो भी कोई अच्छी बात नहीं। हज़रत जुनैद के समय एक बुज़ुर्ग के बारे में

लिखा है कि ज़िक्रे इलाही सुनकर उन पर बेहोशी छा जाती थी। शागिर्दों ने इसकी वजह पूछी तो कहा कि अब मैं क्योंकि बुज़ुर्ग और कमज़ोर हो गया हूँ इसलिए इस तरह होता। देखो उन्होंने यह नहीं कहा कि मैं बूढ़ा और कमज़ोर हो चुका हूं इसलिए इस तरह होता है देखो उन्होंने यह नहीं कहा कि अब चूंकि उच्च स्थान और उच्च स्तर पर पहुँच गया हूं। इसलिए बेहोश हो जाता हूँ बल्कि उसे बुढ़ापा अर्थात कमज़ोरी के कारण बताया है। फिर अगर बेहोशी निराशा और ना उम्मीदी के कारण होती है। तो इसके संबंध में अल्लाह तआला फरमाता है।

وَلَا تَايۡـَٔسُوۡا مِنۡ رَّوۡحِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ لَا يَايۡـَٔسُ مِنۡ رَّوۡحِ اللّٰهِ اِلَّا الۡقَوۡمُ الۡكٰفِرُوۡنَ (यूसुफ: 88)

तो जो व्यक्ति गश खाता और बेहोश होता है तो वह अगर निराशा की वजह से ऐसा करता है तो काफ़िर बनता है और अगर दिल के कमज़ोर होने के कारण बेहोश होता है तो बीमार है। इसकी नकल करना कोई बुद्धिमानी की बात नहीं है।

सहाबा के समय भी यह बात हुई है। हज़रत अब्दुल्ला बिन ज़ुबैर ने अस्मा से बेहोशी के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा-

اَعُوۡذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيۡطٰنِ الرَّجِيۡم

फिर हज़रत अब्दुल्ला बिन ज़ुबैर के लड़के ने अपनी दादी के पास वर्णन किया कि मैं एक ऐसी जगह गया था जहां कुछ लोग क़ुरआन पढ़ते और बेहोश होकर गिर जाते थे। यह सुनकर उनकी फूफी अस्मा ने जो हज़रत अबू बकर की पुत्री और सहाबिया थीं कहा अगर तुम ने ऐसा देखा तो वह शैतानी काम है।

इब्ने सीरियन ख्वाब नामा वाले जो कि अबू हुरैरा के दामाद थे उनसे संबंधित रिवायत है कि उन्हें किसी ने कहा अमुक आदमी अगर क़ुरआन की कोई आयत सुनता है तो बेहोश होकर गिर जाता है। उन्होंने कहा, मैं इस बात को सच समझूं कि उसे एक ऊंची दीवार पर बैठा दो और एक आयत

नहीं बल्कि पूरा क़ुरआन सुनाओ और फिर वह गिर पड़े।

आजकल भी जिनके बारे में कहा जाता है कि हाल खेलते और सीमा से बाहर हो जाते हैं उन्हें देखा गया है कि वह मज्लिस में जब हाल खेलते हैं उस जगह गिरते हैं जहाँ देखते हैं कि कई लोग बैठे हैं ताकि चोट न लगे। यह कभी नहीं हुआ कि वह कोठे से नीचे गिर जाएं। या और किसी ऐसी जगह गिरें जहां सख़्त चोट लग सके सिवाय इसके कि कभी ग़लती से ऐसा हो जाए।

ये सब बातें निषिद्ध हैं:

अत: ये किस्में निषिद्ध और अवैध हैं और उन्हें जितना भी बुरा कहा जाए उचित है क्योंकि यह रूहानियत नष्ट करने और मनुष्यों को बंदर और भालू बनाने वाली बातें हैं। इस्लाम तो आदमी को फरिश्ता बनाने आया था लेकिन इस तरह मनुष्य बंदर बन जाते हैं। अत: ये बातें लग़्व और व्यर्थ हैं और उनका कोई लाभ नहीं है।

वास्तविक ज़िक्रुल्लाह चार हैं:

और जो वास्तव में ज़िक्रुल्लाह हैं और जिनका क़ुरआन में बड़े ज़ोर से आदेश दिया गया है, वह ज़िक्र और हैं और वे चार तरह के हैं। उनका छोड़ना बहुत बड़े सवाब से वंचित रहना है इसलिए उन्हें कभी छोड़ना नहीं चाहिए उनमें से पहला ज़िक्र नमाज़ है (2) क़ुरआन का पढ़ना (3) अल्लाह तआला की विशेषताओं का वर्णन बार-बार करना और उन का विवरण अपनी ज़बान से करना (4) जिस तरह अल्लाह तआला के गुणों को अलग और अकेले में वर्णन करना इसी तरह लोगों में भी व्यक्त करना।

ये वे चार ज़िक्र हैं जो क़ुरआन से साबित हैं और जिनका करना रूहानियत के लिए निहायत ज़रूरी बल्कि अनिवार्य है।

अब मैं इस बात का सबूत देता हूँ कि इन ज़िक्रों को क़ुरआन करीम ने पेश किया है। नमाज़ से संबंधित अल्लाह तआला फरमाता है-

اِنَّنِیۡۤ اَنَا اللّٰہُ لَاۤ اِلٰہَ اِلَّاۤ اَنَا فَاعۡبُدۡنِیۡ ۙ وَ اَقِمِ الصَّلٰوۃَ لِذِکۡرِیۡ

(सूर: ताहा: 15)

हे मनुष्य मैं ही तेरा ख़ुदा हूं और मेरे सिवा तेरा कोई ख़ुदा नहीं। अत: मेरी ही इबादत कर और मेरे ही ज़िक्र के लिए नमाज़ को कायम कर। इस आयत से मालूम हुआ कि जहां अल्लाह तआला ने फरमाया है कि हे मोमिनो! मेरा ज़िक्र करो तो इसके अर्थ यह हुए कि हे ईमान लानेवालो! नमाज़ पढ़ो। फिर फरमाता है-

فَاِنۡ خِفۡتُمۡ فَرِجَالًا اَوۡ رُكۡبَانًا ۚ فَاِذَاۤ اَمِنۡتُمۡ فَاذۡكُرُوا اللّٰهَ كَمَا عَلَّمَكُمۡ مَّا لَمۡ تَكُوۡنُوۡا تَعۡلَمُوۡنَ (अलबक़र:- 240)

नमाज़ पढ़ने की ताकीद करने के बाद कहता है कि अगर तुम्हें दुश्मनों से किसी प्रकार का भय है तो चाहे पैदल या घोड़े पर सवार हो उसी हालत में नमाज़ पढ़ लो और जब तुम शांति में हो तो अल्लाह तआला का ज़िक्र इसी तरह करो जिस तरह उस ने सिखाया है और जिसे तुम पहले नहीं जानते थे इस आयत में नमाज़ का नाम ज़िक्रुल्लाह रखा है इसके बारे में और भी आयतें हैं। लेकिन इस समय में इन्हीं पर बस करता हूं। दूसरा ज़िक्र क़ुरआन है। इसका सबूत यह है कि अल्लाह तआला फरमाता है

اِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا الذِّكۡرَ وَ اِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوۡنَ (अलहिजर: 10)

कि हम ने ही यह ज़िक्र उतारा है और हम ही इसके रक्षक हैं। क़ुरआन के नाज़िल करने को ज़िक्र का उतारना करार दिया है। इससे मालूम हो गया कि जहां अल्लाह तआला ने यह आदेश दिया है कि उज़कुरुल्लाह तो इस के एक यह अर्थ भी हैं कि क़ुरआन पढ़ा करो। फिर अल्लाह तआला फरमाता है-

وَ هٰذَا ذِكۡرٌ مُّبٰرَكٌ اَنۡزَلۡنٰهُ (अल् अंबिया: 51)

इस आयत में भी क़ुरआन करीम को पेश करके फरमाया है कि हम ने तुम्हारे लिए यह ज़िक्र नाज़िल किया है क्या फिर भी तुम इसका इन्कार करते हो।

तीसरा ज़िक्र अल्लाह तआला के गुणों को बार बार दुहराना और उनका स्वीकार करना है। अब मैं इसका सबूत क़ुरआन से देता हूँ। कुछ लोगों का

मानना है कि नमाज़ में जो अल्लाह तआला के गुणों का वर्णन किया जाता है वही पर्याप्त है। लेकिन यह ग़लत है नमाज़ के अतिरिक्त भी ज़िक्रे इलाही होता है और इसका सबूत क़ुरआन से मिलता है। ख़ुदा तआला फरमाता है-

فَاِذَا قَضَيْتُمُ الصَّلٰوةَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ قِيٰمًا وَّ قُعُوْدًا وَّ عَلٰى جُنُوْبِكُمْ

(अन्निसा: 104)

जब तुम नमाज़ पढ़ चुको तो अल्लाह तआला का ज़िक्र करो। खड़े होने की स्थिति में भी बैठने की स्थिति में भी और लेटे होने की स्थिति में भी।

इससे मालूम होता है कि ज़िक्र नमाज़ के अतिरिक्त है क्योंकि नमाज़ में ही अगर अल्लाह तआला के गुणों का वर्णन करना पर्याप्त होता तो अल्लाह तआला यह क्यों फरमाता

فَاِذَا قَضَيْتُمُ الصَّلٰوةَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ قِيٰمًا وَّ قُعُوْدًا وَّ عَلٰى جُنُوْبِكُمْ

(अन्निसा: 104) कि जब तुम नमाज़ पढ़ चुको तो फिर अल्लाह तआला को याद करो। खड़े होकर, बैठकर, लेटकर कर। फिर फरमाता है-

رِجَالٌ ۙ لَّا تُلْهِيْهِمْ تِجَارَةٌ وَّ لَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَ اِقَامِ الصَّلٰوةِ وَ اِيْتَآءِ الزَّكٰوةِ ۙ يَخَافُوْنَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيْهِ الْقُلُوْبُ وَ الْاَبْصَارُ

(अन्नूर: 38) इस आयत में अल्लाह तआला फरमाता है कि ऐसे लोग मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के साथी हैं कि उन्हें ख़रीद तथा बिक्री अल्लाह तआला के ज़िक्र और नमाज़ क़ायम करने और ज़कात देने से नहीं रोकती क्योंकि वे उस दिन से डरते हैं जबकि आँखें और दिल पलट जाएंगे। यहाँ नमाज़ के अतिरिक्त एक ज़िक्रुल्लाह का वर्णन किया है।

चौथा ज़िक्र यह फरमाता है कि अल्लाह तआला के गुण को एलान के साथ लोगों के सामने बयान किया जाए। इस का सबूत है -

يٰۤاَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ قُمْ فَاَنْذِرْ وَ رَبَّكَ فَكَبِّرْ وَ ثِيَابَكَ فَطَهِّرْ وَ الرُّجْزَ فَاهْجُرْ وَ لَا تَمْنُنْ تَسْتَكْثِرُ وَ لِرَبِّكَ فَاصْبِرْ (अल्मुदस्सिर 2-8)

इन आयतों में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को आदेश

दिया गया है कि खड़ा हो और सभी लोगों को डरा। और अपने रब्ब की प्रशंसा बयान कर। इसमें यह बताया गया है कि अल्लाह तआला की बड़ाई लोगों के सामने बयान करना चाहिए। यह तो हुए वे ज़िक्र जिन के करने का अल्लाह तआला ने आदेश दिया है।

ज़िक्र की दो और किस्में:

अब सवाल यह रह जाता है कि उनके करने के तरीके क्या हैं। इस से संबंधित याद रखना चाहिए कि इन ज़िक्रों की दो किस्में हैं। एक फर्ज़ दूसरे नफ्ल। यहाँ फर्ज़ों के बारे में कुछ बताने की ज़रूरत नहीं क्योंकि ख़ुदा की कृपा से हमारी जमाअत के लोग फर्ज़ों को तो अदा करते हैं बाक़ी रहे नफ्ल उनके बारे में कुछ बताने की ज़रूरत है। लेकिन चूंकि यह विषय लंबा है फिलहाल मैं इसे छोड़ता हूँ और यह बताता हूँ कि क़ुरआन कैसे पढ़ना चाहिए। इसके बारे में याद रखना चाहिए कि इंसान रोज़ पढ़ने के लिए क़ुरआन का एक हिस्सा निर्धारित कर ले कि इतना हर दिन पढ़ा करूँगा। यह नहीं होना चाहिए कि कभी क़ुरआन उठाया और कुछ पढ़ लिया। बल्कि नियमित और निर्धारित अनुमान से पढ़ना चाहिए। बिना नियम के पढ़ने अर्थात कभी पढ़ा और कभी न पढ़ा कुछ लाभ नहीं होता। अत: क़ुरआन से संबंधित चाहिए कि इसका एक हिस्सा निर्धारित कर लिया जाए और उस को हर दिन पूरा किया जाए वह भाग चाहे एक पारा हो या आधा दो या तीन या चार पारे हों। उसको रोज़ पढ़ा जाए और उसे पूरा करने में कोताही न की जाए। रसूल करीम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं कि अल्लाह तआला को सब से अधिक वह इबादत पसंद है कि जिस पर मनुष्य निरन्तरता अपनाए और जिसमें नाग़ा न होने दे। (मिश्कात किताबुल ईमान) क्योंकि नाग़ा करने से मालूम होता है कि उसे शौक नहीं है और शौक और दिली मुहब्बत के बिना हृदय की सफाई नहीं होती।

मैंने देखा है कि जब कभी किसी विषय में लीन होने या किसी और कारण से क़ुरआन न पढ़ा जाए तो दिल बेचैनी महसूस करता और दूसरी इबादतों में भी इसका असर महसूस होता है। (मिश्कात किताबुल ईमान) प्रथम तो

क़ुरआन रोज़ पढ़ना चाहिए। द्वित्तीय चाहिए कि क़ुरआन को समझ कर पढ़ा जाए और इतनी जल्दी जल्दी न पढ़ा जाए कि मतलब ही समझ में न आए "तरतील" के साथ पढ़ना चाहिए ताकि अर्थ भी समझ में आए और क़ुरआन करीम का सम्मान भी ध्यान में रहे। तृतीय जहां तक हो सके क़ुरआन पढ़ने से पहले वज़ू किया जाए यद्यपि मेरे निकट वुज़ू के बिना पढ़ना भी वैध है। हाँ कुछ उल्मा ने वुज़ू के बिना तिलावत क़ुरआन को नापसंद किया है। मेरे निकट इस तरह पढ़ना नाजाईज़ नहीं लेकिन उचित यही है कि असर और सवाब अधिक पाने हेतु वज़ू कर लिया जाए।

एक दोस्त पूछते हैं कि अगर क़ुरआन समझ में न आए तो क्या किया जाए। ऐसे लोगों को चाहिए कि क़ुरआन का अनुवाद पढ़ने की कोशिश करें। लेकिन अगर पूरा अनुवाद न आता हो तो इस तरह करना चाहिए कि कुछ क़ुरआन का अनुवाद सीख लिया जाए और जब रोज़ मंज़िल (एक निर्धारित भाग) पढ़ें तो साथ ही उस भाग को भी पढ़ लें जिसका अनुवाद जानते हों। कोई कहे कि फिर मंज़िल पढ़ने का क्या लाभ जबकि इसका अर्थ समझ में नहीं आता। इस से संबंधित यह याद रखना चाहिए कि जब कोई काम नेक नीयत और श्रद्धा से किया जाता है तो अल्लाह तआला उस ईमानदारी और इरादे को देखकर ही उसे इनाम दे देगा और यह बात भी उचित है कि शब्दों का भी असर होता है। देखिए रसूले करीम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने आदेश दिया है कि जब बच्चा पैदा हो तो उसके कान में अज़ान कही जाए। हालांकि उस समय बच्चा बिल्कुल कुछ जानने समझने से असमर्थ होता। लेकिन "दाशता आयद बकार" के अनुसार उस का प्रभाव ज़रूर होता है।

अन्य ज़िक्र:

क़ुरआन की तिलावत के अतिरिक्त अन्य ज़िक्र, तस्बीह और तहमीद जिन्हें इंसान अकेला बैठकर करे या मज्लिसों में। इस ज़िक्र की भी एक किस्म फर्ज़ है जैसा कि जानवर ज़िब्ह करते समय तकबीर पढ़ना अगर उस समय तकबीर नहीं पढ़ी जाएगी तो जानवर हराम होगा और दूसरी किस्म नफिल है जो दूसरे समय में विर्द (जाप) की शक्ल में पढ़ी जाती है और

उनको रसूले करीम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने बहुत पढ़ने को कहा है। अर्थात आप ने हर अवसर पर अल्लाह तआला का ज़िक्र रखा है जैसे जब भोजन करने बैठ तो बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम पढ़ लो। इस का मतलब यह नहीं कि अगर कोई नहीं पढ़ेगा तो उसका पेट नहीं भरेगा। बल्कि यह है कि जिस उद्देश्य के लिए खाना खाया जाता है वह इस तरह पूरे रूप में प्राप्त होगा अर्थात रूहानियत को इससे बहुत लाभ पहुंचेगा। फिर हर काम शुरू करने के समय बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम पढ़ने का आदेश है ताकि काम में बरकत हो और जब इसे ख़त्म कर लिया जाए। तो अल्हम्दो लिल्लाह रब्बलिआलमीन पढ़ा जाए। ताकि काम में बरकत हो। इसी तरह अगर कोई नया कपड़ा पहने या कोई और नई चीज़ उपयोग करे तो अल्हम्दो लिल्लाह कहकर उसका शुक्रिया अदा करे। हर दु:ख और मुसीबत के समय اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि रजेऊन पढ़ना चाहिए। अगर कोई बात अपनी ताकत और हिम्मत से बड़ी पेश आए तो لَا حَوْلَ وَ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ (ला हौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाह) कहना चाहिए।

अत: ये ज़िक्र इन बातों के बारे में हैं जो दैनिक पेश आते रहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को दिल में या ख़ुशी होगी या दुख तो अगर ख़ुशी हो तो اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ कहे और यदि दु:ख हो तो اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ पढ़े। अल्लाह तआला फरमाता है فَاذْكُرُوْا اللّٰهَ قِيٰمًا وَّقُعُوْدًا وَّعَلٰى جُنُوْبِكُمْ और आँ हज़रत (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने हर हालत से संबंधित ज़िक्र निर्धारित कर दिए हैं इसलिए उनके लिए मनुष्य हर हालत में अल्लाह तआला के ज़िक्र में संलग्न रहता है जैसे एक व्यक्ति जो दफतर में बैठा काम कर रहा हो वह अगर अपने बारे में कोई सुसमाचार सुने तो अल्हम्दो लिल्लाह कहे। अगर चलते हुए यह ख़ुशी की बात मालूम हो तो भी अल्हम्दो लिल्लाह कहे। अगर लेटे हुए ख़ुशी की बात सुने तो उसी हालत में अल्हम्दो लिल्लाह। इस तरह अपने आप قِيٰمًا وَّقُعُوْدًا وَّعَلٰى جُنُوْبِكُمْ अल्लाह तआला का ज़िक्र होता रहेगा। फिर रसूले करीम (सल्लल्लाहो अलैहि

वसल्लम) फरमाते हैं कि اَفْضَلُ الذِّكْرِ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ (तिर्मिज़ी किताबुल दावात) जाबिर से तिर्मिज़ी में रिवायत है कि सबसे बेहतर और उत्तम ज़िक्र यह है कि इस बात को स्वीकार किया जाए कि अल्लाह तआला के सिवा कोई उपास्य नहीं है। शेष ज़िक्रों की भी विभिन्न फज़ीलतें हैं। इसलिए आँहज़रत (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ के बारे में फरमाया है-

كَلِمَتَانِ خَفِيْفَتَانِ عَلَى اللِّسَانِ ثَقِيْلَتَانِ فِى الْمِيْزَانِ حَبِيْبَتَانِ اِلَى الرَّحْمٰنِ (बुख़ारी किताबुल तौहीद)

कि दो बातें ऐसी हैं कि जो ज़बान से कहने में छोटी हैं, लेकिन जब क़यामत के दिन वज़न की जाएंगी तो उनका इतना वज़न होगा कि उनकी वजह से नेकी का पलड़ा भारी हो जाएगा और वह अल्लाह तआला को बहुत ही पसंद हैं। यह भी बहुत उच्च स्तर का ज़िक्र है। यहां तक कि एक बार जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बीमारी की अधिकता के कारण सफर में तहज्जुद के लिए उठे और बेहोश होकर गिर गए और नमाज़ न पढ़ सके तो इल्हाम हुआ कि ऐसी स्थिति में तहज्जुद के स्थान पर लेटे लेटे यही पढ़ लिया करो। तो यह भी बहुत सवाब वाला ज़िक्र है। हदीसों में आता है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अक्सर इसे पढ़ते थे।

इन दो ज़िक्रों को रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बेहतर बताया। मगर एक और ज़िक्र भी बेहतर ज़िक्र है यद्यपि उस से संबंधित रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का कोई उपदेश नहीं मिलता। लेकिन अक्ल बताती है कि वह भी बहुत उच्च स्तर का है और वह क़ुरआन की आयतों का ज़िक्र है। अगर उन्हें ज़िक्र के रूप में पढ़ा जाए तो दुगना इनाम मिलेगा। एक तिलावत का और दूसरा ज़िक्र का। यह दो मैंने ज़िक्र बतलाए। अब उन से संबंधित सावधानियां बताता हूं।

ज़िक्र करने से संबंधित सावधानियां:

पहली सावधानी यह है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

फरमाते हैं कि कभी इतना ज़िक्र न करो कि दिल दुखी हो (2) ऐसे समय में ज़िक्र नहीं करना चाहिए जबकि दिल संतुष्ट न हो। जैसे एक आवश्यक काम करना है तब कोई अगर ज़िक्र करने के लिए बैठ जाए तो ध्यान ज़िक्र की ओर न होगा और इस तरह अल्लाह तआला के कलाम का अपमान होगा।और इंसान गुनाहगार ठहरेगा। तो ज़िक्र करने के लिए पहली सावधानी इस तरह करनी चाहिए कि ज़िक्र में इतना लंबा समय न करे कि दिल दुखी हो जाए और दूसरा यह कि ऐसे समय में ज़िक्र के लिए न बैठे जबकि दिल किसी और विचार में लगा हो और बजाए इनाम पाने के गुनाहगार ठहरे। बल्कि संक्षेप के साथ और ध्यान केन्द्रित होने के समय करे। एक बार रसूले करीम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) घर में आए तो हज़रत आयशा एक महिला से बातें कर रही थी। आपने फ़रमाया क्या कह रही हो। हज़रत आयशा ने कहा यह सुना रही है कि मैं इतनी इबादत करती हूँ और इस तरह करती हूँ आप ने यह सुन कर फरमाया यह कोई ख़ुशी की बात नहीं है कि इतनी अधिक इबादत की जाए। अल्लाह तआला उसी इबादत को पसंद करता है जिस पर निरन्तरता धारण की जा सके। (मिशक़ात किताबुल ईमान) अल्लाह तआला अधिक इबादत से दुखी नहीं होता बल्कि बंदा ख़ुद दुखी हो जाता है और जब दुखी हो जाता है तो फिर इस की इबादत किसी काम की नहीं रहती। अतः अगर कोई अत्याधिक बढ़ता है तो उस पर मुसीबत पड़ जाती है। अब्दुल्लाह पुत्र अमर पुत्र आस के संबंध में आया है कि वह एक शक्तिशाली इंसान थे सारी रात नमाज़ पढ़ते और दिन में रोज़े रखते और सारे क़ुरआन करीम की तिलावत एक दिन में करते। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जब मालूम हुआ तो आपने फ़रमाया कि यह जायज़ नहीं है। रात का छठा, तीसरा या अधिकतम आधा भाग नमाज़ पढ़नी चाहिए और रोज़ा अधिकतम एक दिन रखना चाहिए और एक दिन इफ्तार करना चाहिए और क़ुरआन तीन दिन से कम समय में समाप्त नहीं करना चाहिए। (बुख़ारी किताबुस्सौम) इसके बारे में अब्दुल्ला बिन अम्र बिन आस ने बहुत कोशिश की कि इससे अधिक के लिए अनुमति मिल जाए लेकिन आप ने

अनुमति नहीं दी। वह इसी पर अनुकरण करते रहे। लेकिन जब बूढ़े हो गए। तो बहुत दुख जताते कि मैंने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से वादा तो कर लिया लेकिन अब नहीं कर सकता। तो अत्यधिक बढ़ना कठिनाइयों में डाल देता है। ज़िक्र भी एक बहुत अच्छी चीज़ है मगर देखो जिस तरह पुलाओ अधिक खा लिया जाए तो वह अपच कर देता है इसी तरह ज़िक्र में अत्यधिक बढ़ना भी नफ्स पर ऐसा बोझ हो जाता है कि वह ज़िक्र से भागने वाला हो जाता है। अत: धीरे धीरे स्वयं पर बोझ डालना चाहिए और इतना डालना चाहिए जो सहन कर सके।

तीसरी सावधानी यह करनी चाहिए कि शुरुआत में अगर तबीयत ज़िक्र की तरफ आकर्षित न हो। तो भी दिल को मज़बूत करके मनुष्य करता रहे और दृढ़ता से इरादा कर ले कि ज़रूर पूरा करूँगा और नीयत कर ले कि शैतान कितना ही ज़ोर लगाए इस बात को हरगिज़-हरगिज़ नहीं मानूंगा। अगर इंसान इस तरह इरादा कर ले तो ज़रूर तबीयत को मनवा लेता है। कहते हैं राय टेकेन एक मशहूर वकील था। उसके मुक़ाबले में एक और वकील आया। उसने यह चालाकी की कि जज से बातें करते करते कह दिया कि राए टेकेन का दावा है कि चाहे कोई जज कितना ही सावधान रहे में उससे मनवा लेता हूं। यह सुनकर मजिस्ट्रेट ने इरादा किया कि राय टेकेन जो कुछ कहेगा मैं कभी नहीं मानूंगा। अत: जब मुकदमा पेश हुआ तो जो बात राय टेकेन पेश करे। मजिस्ट्रेट उससे इंकार कर दे और आख़िरकार दूसरे वकील के पक्ष में ही निर्णय दिया। तो जब व्यक्ति इस बात का इरादा कर लेता है कि मैं अमुक का प्रभाव कभी नहीं स्वीकार करूंगा तो वह उस पर नियंत्रण नहीं पा सकता। अत: प्रारंभिक अवस्था में ज़िक्र करने के समय ऐसी ही स्थिति बनानी चाहिए।

चौथी सावधानी यह है कि ज़िक्र करते समय किसी कष्ट की स्थिति में नहीं होना चाहिए जैसे फर्श पर बैठे हुए कोई चीज़ चुभती हो या और इसी प्रकार की कोई असुविधा हो उसे दूर करके ज़िक्र में मग्न होना चाहिए।

पांचवीं यह कि ऐसी स्थिति बनानी चाहिए कि मझे जो कुछ प्राप्त होगा

उसे स्वीकार कर लूंगा। अगर शुरुआत में उदासीन हो। तो भी किसी न किसी समय ज़िक्र तबीयत में दाख़िल हो जाएगा।

छठी यह कि ज़िक्र विनय और विनम्रता से किया जाए। अगर विनय पैदा न हो। तो ऐसी सूरत बना ले कि जिस से विनय प्रकट होता है। क्योंकि कुछ बातें जो शुरुआत में कृत्रिम रूप से धारण की जाती हैं धीरे धीरे इसी तरह हो जाती हैं। अत: जब कोई विनय धारण करने की कोशिश करता और रोने की शैली बनाता है तो नतीजा यह होता है कि एक समय में विनय पैदा होता है। एक प्रोफेसर से के बारे में लिखा है कि वह बड़ा ही नरम दिल था लेकिन बाद में बड़ा कठोर दिल हो गया। उस का कारण यह हुआ कि एक दिन जो नरमी के कारण उसे कष्ट हुआ तो उसने इरादा किया कि अब सख्त हो जाउंगा। इसके लिए उसने सख्ती वाली शक्ल बना ली यद्यपि दिल में वही नरमी थी। लेकिन ज़ाहिरी तौर पर सख्त और कठोर मालूम होता था होते-होते यह हुआ कि दिल भी सख्त हो गया। वह प्रोफेसर यद्यपि अपनी आदत को बुराई की ओर ले गया मगर तुम लोग अगर नेकी की ओर जाने के लिए इस तरह करोगे तो धीरे-धीरे वास्तव में तुम्हारे अंदर विनम्रता उत्पन्न हो जाएगी। और अगर एक दिन एक सैकंड के लिए भी वास्तिवक विनम्रता पैदा हो जाएगी तो दूसरे दिन अधिक समय के लिए उत्पन्न हो सकेगी। तो अगर यह कोशिश करोगे तो ज़रूर सफल हो जाओगे।

ज़िक्र करने के समय:

अब जबकि यह सिद्ध हो गया कि ज़िक्र बहुत आवश्यक है जैसा कि मैंने बताया है कि अल्लाह तआला फरमाता है-

فَاِذَا قَضَيْتُمُ الصَّلٰوةَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ قِيٰمًا وَّ قُعُوْدًا وَّ عَلٰى جُنُوْبِكُمْ

(अन्निसा: 104) यह पता होना चाहिए कि किस-किस समय ज़िक्र करना चाहिए। यूं तो हर समय ही अल्लाह तआला का ज़िक्र करना चाहिए। अत: रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में आयशा सिद्दीक़ा फरमाती हैं كَانَ رَسُوْلُ اللّٰهِ يَذْكُرُ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ اَحْيَانِهٖ (तिर्मिज़ी) रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हर समय ही अल्लाह तआला का ज़िक्र करते थे। लेकिन

कुछ समय क़ुरआन में अल्लाह तआला ने वर्णन फरमाए हैं और वे हैं-

يَآيُّهَاالَّذِيۡنَ اٰمَنُوا اذۡكُرُوا اللّٰهَ ذِكۡرًا كَثِيۡرًا وَّ سَبِّحُوۡهُ بُكۡرَةً وَّ اَصِيۡلًا

(अल्-अहज़ाब: 42-43) याद करो अल्लाह को "बुकरह" और "असील" के समय। ये दोनों समय बहुत उच्च स्तर के है। बुकरह अरबी में पौ फूटने से सूरज निकलने तक को कहते हैं। इस दृष्टि से यह अर्थ हुए कि सुबह की नमाज़ से लेकर सूरज निकलने तक ज़िक्र करो। एक समय यह हुआ और दूसरा समय असील है। शब्दकोष से मालूम होता है कि "असील" असर से लेकर सूरज के डूबने तक को कहते हैं। तीसरा चौथा और पांचवा समय जो इस आयत में वर्णन हुआ है -

فَاصۡبِرۡ عَلٰى مَا يَقُوۡلُوۡنَ وَ سَبِّحۡ بِحَمۡدِ رَبِّكَ قَبۡلَ طُلُوۡعِ الشَّمۡسِ وَ قَبۡلَ غُرُوۡبِهَا ۚ وَ مِنۡ اٰنَآئِ الَّيۡلِ فَسَبِّحۡ وَ اَطۡرَافَ النَّهَارِ لَعَلَّكَ تَرۡضٰى (ताहा: 131)

अर्थात सब्र कर उन बातों पर जो ये लोग कहते हैं और तस्बीह और तहमीद कर अपने रब्ब की सूरज निकलने से पहले और उसके डूबने से पहले (इन दोनों समयों का ज़िक्र पहले आ चुका है) और रात के समय में और इन की दोनों तरफों में ताकि तेरी इच्छा पूरी हो। इस आयत में के पहले दो समयों के अर्थात सूरज निकलने के बाद का समय और रात का पहला और पिछला समय ज़िक्र के लिए उपयोगी बताया गया है।

छठा समय प्रत्येक नमाज़ पढ़ने के बाद है। रसूल करीम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) इस ज़िक्र को हमेशा जारी रखते थे मानो सुन्नत हो गई थी। इब्ने अब्बास कहते हैं कि जब हम दूर होते थे तो اَنۡتَ السَّلَامُ وَمِنۡكَ السَّلَامُ يَا ذَاالۡجَلَالِ وَالۡاِكۡرَامِ से पता करते थे कि नमाज़ समाप्त हो गई है। अत: नमाज़ के बाद पढ़ने के लिए एक ज़िक्र तो यह है कि-

اَللّٰهُمَّ اَنۡتَ السَّلَامُ وَمِنۡكَ السَّلَامُ تَبَارَكۡتَ يَا ذَاالۡجَلَالِ وَالۡاِكۡرَامِ

पढ़ा जाए। दूसरे यह कि سُبۡحَانَ اللّٰهِ और اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ तैंतीस-तैंतीस बार पढ़ा जाए और अल्लाहो अकबर चौंतीस बार पढ़ा जाए (तिर्मिज़ी किताबुल

दावात) यह ज़िक्र कई तरीके पर रिवायत है। लेकिन सबसे उचित तरीका यही है अलग अलग पहले दोनों वाक्य को तैंतीस-तैंतीस बार कहे और तीसरे को चौंतीस बार। नमाज़ के बाद का समय ज़िक्र के लिए बहुत ही उच्च दर्जा का है उस समय ज़रूर ज़िक्र करना चाहिए। कुछ लोग मुझे और हज़रत मौलवी साहिब ख़लीफतुल मसीह अव्वल और हज़रत मसीह मौऊद[अ.] को देखकर शायद समझते हों कि यह नमाज़ के बाद ज़िक्र नहीं करते। उन्हें पता होना चाहिए कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और हज़रत ख़लीफतुल मसीह अव्वल भी ज़िक्र किया करते थे और मैं भी करता हूँ, हाँ ज़ोर से न वे करते थे और न मैं। मैं दिल में करता हूँ। अत: नमाज़ के बाद ज़रूर ज़िक्र करना चाहिए।

ज़िक्र से संबंधित कुछ अन्य सावधानियां भी हैं और वह यह कि सिवाय उन मौकों के जो हदीस से प्रमाणित हैं मज्लिस में ज़ोर से ज़िक्र न किया जाए। कई बार इस तरह अहंकार पैदा हो जाता है। कई बार अन्य लोगों को ज़िक्र करने या नमाज़ पढ़ने में तकलीफ होती है। फिर भी याद रखना चाहिए कि जो बात नई धारण की जाए वह बोझिल मालूम होती है और इसके करने से दिल घबराता है यही कारण है कि कुछ लोग कहते हैं कि ज़िक्र में दिल नहीं लगता। लेकिन क्या एक ही दिन में कोई व्यक्ति किसी कला में पूर्ण हो जाता है? हरगिज़ नहीं बल्कि धीरे धीरे और कुछ अवधि के बाद ऐसा होता है। अत: अगर शुरुआत में किसी का दिल न लगे और उसे बोझ सा मालूम हो तो वह घबराए नहीं। धीरे धीरे दिल स्वीकार कर लेगा लेकिन शर्त यह है कि ज़िक्र को बनाए रखा जाए। फिर कुछ लोग कहते हैं कि हमें ज़िक्र करने में आनन्द भी आ जाता है मगर उन्हें चाहिए कि नफ्स के लिए आनन्द तलाश करें और ज़िक्र करने के समय यह इरादा न हो कि सुख प्राप्त हो बल्कि इबादत समझ कर करना चाहिए। क्योंकि आनंद मूल चीज़ नहीं है मूल चीज़ इबादत है और इबादत तभी स्वीकार होती है जबकि इबादत समझ कर की जाए।

फिर कुछ लोग कहते हैं कि हमें ज़िक्र करने के लिए कुछ दिन तो कब्ज़

रहती है और कुछ दिन तबीयत खुल जाती ऐसे लोगों को भी घबराना नहीं चाहिए। कब्ज़ सभी प्रकार के लोगों को होती है। एक बार एक सहाबी रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आया और आकर कहा कि हुज़ूर मैं मुनाफ़िक़ हूँ। आप ने फरमाया नहीं तुम तो मुसलमान हो। उस ने कहा हुज़ूर जब आप के सामने आता हूँ तो जन्नत और जहन्नम मेरी आँखों के सामने आ जाते हैं और जब घर जाता हूं तो फिर वह स्थिति स्थिर नहीं रहती। आप ने फरमाया अगर वही स्थिति हर समय बनी रहे तो मर जाओ। (मुस्लिम किताबुल तौब:) मूल बात यह है कि अगर हर समय एक ही स्थिति रहे तो फिर बढ़ने और विकसित करने की शक्ति छिन जाती है। इसलिए अल्लाह तआला कभी तो मूल स्थिति से नीचे कर देता है ताकि व्यक्ति कूद कर पहले से भी आगे बढ़ जाए और कभी ऊपर चढ़ा देता है। हाँ कब्ज़ संबंधित एक विशेष बात याद रखनी चाहिए और वह यह है कि एक कब्ज़ अच्छी होती है और एक बुरी और इन का पता इस तरह लग सकता है कि ज़िक्र के बारे में आनंद आने का एक दर्जा तय कर लिया जाए जैसे एक स्तर है इस से ऊपर 2, 3, 4, 5 स्तर हैं। अब अगर कोई व्यक्ति दो स्तर पर है और क़ब्ज़ उसे पहले स्तर पर ले जाती है तो समझना चाहिए कि इनाम दिलाने वाली क़ब्ज़ है। लेकिन अगर तीन दर्जा पर हो और फिर क़ब्ज़ हो तो देखना चाहिए कि अब क़ब्ज़ दो दर्जा पर ले गई है या एक दर्जा पर या बिल्कुल शून्य पर। अगर दो स्तर पर हो तो समझना चाहिए अब क़ब्ज़ दो स्तर पर ले गई है। यदि दो स्तर पर हो तो समझना चाहिए कि तरक्की दिलाने वाली है और अगर एक या शून्य के दर्जा पर हो तो खतरे का स्थान है इसके लिए विशेष प्रयास और कोशिश करनी चाहिए।

नमाज़ का ज़िक्र

अब मैं नमाज़ के बारे में बताता हूँ। यह सबसे आवश्यक और महत्वपूर्ण ज़िक्र है क्योंकि इसमें कभी व्यक्ति खड़ा होकर ज़िक्र करता है और कभी रुकूअ में, कभी सिज्दे में, कभी बैठकर, फिर नमाज़ में क़ुरआन पढ़ता है और इसके अतिरिक्त और ज़िक्र भी करता है। अत: नमाज़ सब ज़िक्रों में

जामेअ (सारगर्भित) है। पहले मैंने इस के बारे में वर्णन इस लिए छोड़ दिया था कि बहुत व्याख्या चाहती है लेकिन अब वर्णन करता हूँ।

नमाज़ के तीन हिस्से हैं (1) फर्ज़ (2) सुन्नत (3) नफिल । फ़र्ज़ और सुन्नत तो सब लोग अदा करते हैं बाकी रहे नफ्ल उनके अदा करने में प्राय: सुस्ती करते हैं। सुन्नतों से संबंधित तो याद रखना चाहिए कि वह इसलिए निर्धारित की गई हैं कि फर्ज़ों के अदा करने में जो कमी या त्रुटि रह जाए उसे पूरा कर दें। क्योंकि अल्लाह तआला घटिया नमाज़ स्वीकार नहीं करता बल्कि पूर्ण स्वीकार करता है और अगर त्रुटि हो तो सुन्नत पूरा करती है जैसे किसी ने नमाज़ पढ़ी मगर एक रकअत में उस का ध्यान स्थापित न रहा और विभिन्न प्रकार की शंकाए उत्पन्न होती रहीं इसलिए वह रकअत स्वीकार न होगी। इस के बदला में सुन्नतें रख दी जाएँगी ताकि नमाज़ पूरी हो। रसूले करीम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) चूँकि इंसान के हृदय की स्थिति को ख़ूब जानते थे और समझते थे इसलिए आप ने फर्ज़ों के साथ सुन्नतें अपनी ओर से लगा दीं ताकि फर्ज़ों की कमी पूरा कर दें और यह आप ने अपनी उम्मत पर बहुत बड़ा उपकार किया है।

नफ्ल की फज़ीलत

अब नफ्ल शेष रहे वे अल्लाह तआला की निकटता का माध्यम होते हैं। अर्थात मुक्ति के अतिरिक्त उच्च स्तर प्राप्त करने का कारण बनते हैं। तो जो व्यक्ति ख़ुदा तआला की निकटता चाहता है उसके लिए आवश्यक है कि नफ्ल पढ़ने पर बहुत ज़ोर दे। फिर नफ्ल भी कई प्रकार के होते हैं। कुछ दिन में पढ़े जाते हैं कुछ रात में। जो रात में पढ़े जाते हैं उनको तहज्जुद कहते हैं और यह अधिक महत्त्वपूर्ण होते हैं और ऐसे उत्तम कि अल्लाह तआला ने क़ुरआन में इनकी बरकतें इस तरह वर्णन की है-

اِنَّ نَاشِئَةَ الَّيْلِ هِيَ اَشَدُّ وَطْاً وَّ اَقْوَمُ قِيْلًا (अलमुज़म्मिल: 6)

कि इंसान के नफ्स को ठीक करने के लिए रात का उठना बहुत बड़ा माध्यम है। तो अगर कोई व्यक्ति अनुभव करके देखेगा तो उसे पता चल जाएगा कि किस तरह नफ्स का बहुत बड़ा व्यापक सुधार हो जाता है और

विशेष बल और शक्ति प्राप्त होती है सहाबा किराम इन पर विशेष रूप से निरन्तरता रखते थे और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इन नफ्लों का इतना ख्याल था कि बावजूद इस के नफिल होने के आप रात को फिर कर देखते कि सहाबा में से कौन यह नफिल पढ़ता है और कौन नहीं पढ़ता। एक बार आप की मज्लिस में अब्दुल्ला बिन उमर का वर्णन आया कि वह बहुत अच्छा है उस में यह यह ख़ूबी है, यह गुण है तो आपने फरमाया कि हाँ बड़ा अच्छा है बशर्ते कि तहज्जुद पढ़े। (बुख़ारी किताबुल तहज्जुद) चूँकि अब्दुल्ला बिन उमर युवा थे और तहज्जुद पढ़ने में सुस्ती करते थे इसलिए आपने इस तरह उन्हें इस ओर ध्यान दिलाया। फिर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला का उस पति पत्नी पर रहम हो कि अगर रात पति की आंख खुले तो उठकर तहज्जुद पढ़े और पत्नी को जगाए कि तू भी उठकर तहज्जुद पढ़ और अगर पत्नी न जागे तो पानी के छींटे उसके मुँह पर मारे और जगाए। इसी तरह अगर पत्नी की आंख खुले तो वह भी ऐसा ही करे कि खुद तहज्जुद पढ़े और मियां को जगाए अगर वह न जागे तो उसके मुंह पर छींटे मारे (मिशक़ात किताबुल बियूअ) देखो एक तरफ तो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पत्नी के लिए पति का सम्मान बहुत ज़रूरी करार दिया है और दूसरी तरफ तहज्जुद के लिए जगाने के लिए अगर पानी के छींटे भी मारना पड़े तो भी वैध रखा है। मानो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तहज्जुद को इस कदर ज़रूरी समझते थे। यह रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ से है। फिर क़ुरआन कहता है कि रात का उठना नफ्स को सीधा कर देता है। यही कारण है कि रसूले करीम ने सहाबा से कहा कि चाहे तहज्जुद दो रकअत ही पढ़ो लेकिन पढ़ो ज़रूर। फिर हदीसों से यह भी साबित होता है कि रात के अंतिम भाग में अल्लाह तआला करीब आ जाता है और बहुत ज़्यादा दुआएं स्वीकार करता है इसलिए तहज्जुद पढ़ना बहुत ज़रूरी और बहुत फायदेमंद है।

तहज्जुद के लिए उठने के तेरह तरीके:

अब सवाल यह है कि तहज्जुद पढ़नी तो ज़रूर चाहिए लेकिन रात को उठें कैसे? इसका एक छोटा तरीका पहले बताता हूँ। हालांकि इसमें नुकसान भी है लेकिन लाभ भी हो सकता है और वह यह है कि आजकल अलार्म वाली घड़ियां मिल सकती हैं उनके द्वारा मनुष्य जाग सकता है। लेकिन मेरा अनुभव है कि यह कोई ऐसा उपयोगी तरीका नहीं है। कारण यह है कि चूंकि मनुष्य को भरोसा हो जाता है कि वह मुझे समय से जगा देगी इसलिए रात को उठने की नेकी की तरफ जो तवज्जो और विचार होना चाहिए वह उसे नहीं होता। अगर उसे उठने का विचार होता और इसी विचार में ही उसकी आंख लग जाती तो मानो वह सारी रात इबादत करता रहता। इसके अतिरिक्त कभी ऐसा भी होता है कि अगर उठने को जी न चाहे तो व्यक्ति बजते बजते अलार्म को बंद कर देता है। लेकिन अगर नीयत और इरादे से सोएगा तो समय पर ज़रूर उठ खड़ा होगा। फिर ऐसे लोग जो घड़ी द्वारा उठते हैं वे इस बात की शिकायत करते हैं कि नमाज़ में नींद आती है। इसकी भी वजह यही है कि वह घड़ी से उठते हैं न कि अपने तौर से इसलिए यह तरीका कोई उपयोगी नहीं है। हाँ प्रारंभिक अवस्था के लिए या किसी विशेष ज़रूरत के समय उपयोगी होता है।

मेरे निकट वे तरीके जिनसे रात उठने में मदद मिल सकती है तेरह हैं। यदि कोई व्यक्ति उन पर अमल करे तो मैं विश्वास रखता हूँ कि अल्लाह तआला के फज़ल से उसे ज़रूर सफलता होगी। शुरू में तो हर काम में परेशानी होती है लेकिन अन्ततः ज़रूर उनके द्वारा सफलता होगी। यह सब बातें जो मैं बयान करूँगा वह क़ुरआन और हदीस से ही समायोजन हुई बयान करूँगा न कि अपनी ओर से। लेकिन यह ख़ुदा तआला ने मुझ पर विशेष कृपा की है कि ये बातें मुझ पर ही खोली गई हैं। और दूसरों से छिपी रही हैं। अगर समय तंग न होता तो मैं क़ुरआन की वे आयतें और हदीसें भी बयान कर देता जिनसे मैंने उद्धृत की हैं लेकिन अब केवल परिणाम ही बयान करूँगा।

पहला तरीका

यह है कि अल्लाह तआला ने प्रकृति में यह नियम रखा है कि जिस समय कोई चीज़ पैदा हुई हो वही जब दूसरी बार आए तो इस चीज़ में फिर जोश पैदा हो जाता है। इस के उदाहरण बहुत मिल सकते हैं। जैसे इंसान को जो बीमारी बचपन में हुई हो वही बीमारी बुढ़ापे में जबकि बचपन जैसी स्थिति हो जाती है लौट आया करती है। यही बात पेड़ों और पक्षियों में पाई जाती है। इस नियम से रात में उठने में इस तरह मदद मिल सकती है कि इशा की नमाज़ पढ़ने के बाद कुछ समय ज़िक्र कर ले। इसका यह फायदा होगा कि जितना समय वह ज़िक्र करेगा सुबह उतना ही पहले उसकी आंख ज़िक्र करने के लिए खुल जाएगी।

दूसरा तरीका

यह है कि इशा की नमाज़ पढ़ लेने के बाद किसी से बात न करे। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी इशा की नमाज़ पढ़ने के बाद बात करने से रोका है। यद्यपि यह भी साबित होता है कि कई बार आप कलाम करते रहे हैं। लेकिन आमतौर पर आपने मना फरमाया है। इसका कारण यह है कि अगर इशा की नमाज़ के बाद बातें शुरू कर दी जाएगी तो व्यक्ति अधिक जागेगा और सुबह देर करके उठेगा और दूसरे यह कि अगर वे बातें मज़हबी और धार्मिक न होंगी तो उनकी वजह से ध्यान धर्म से हट जाएगा। इसलिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि इशा की नमाज़ के बाद बिना बात किए सो जाना चाहिए ताकि धार्मिक विचारों पर ही आंख लगे और जल्दी खुल जाए। दफ़्तर के काम या और कोई आवश्यक कार्य इशा की नमाज़ के बाद मना नहीं। लेकिन यह आवश्यक है कि सोने से पहले ज़िक्र कर ले। यह दूसरा तरीका है।

तीसरा तरीका

यह है कि जब कोई इशा की नमाज़ पढ़कर आए और सोने लगे तो चाहे उसका वज़ू ही है तो भी ताज़ा वुज़ू करके चारपाई पर लेटे। इसका असर दिल पर पड़ता है और विशेष प्रकार की ताज़गी पैदा होती है और जब कोई

ताजा वज़ू के कारण ताज़गी की स्थिति में सोएगा तो वह आंख खुलते समय भी ताज़गी में ही होगा। आमतौर पर यह देखा गया है कि अगर कोई रोता सोए तो वह चीख़ मार कर उठ बैठता है और अगर हंसता सोए तो उठते समय भी उसका चेहरा खिला हुआ होता है उसी तरह जो वुज़ू करके ताज़गी से सोता है वह उठता भी ताज़गी से ही है और इस तरह उसे उठने में मदद मिलती है।

चौथा तरीका

यह है कि जब सोने लगे तो कोई ज़िक्र करके सोए। इसका नतीजा यह होगा कि रात ज़िक्र करने के लिए फिर उसकी आंख खुल जाएगी। यही कारण है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी सोने से पहले यह ज़िक्र किया करते थे। आयतल कुर्सी, फिर तीनों क़ुल एक बार पढ़ कर अपने हाथों में फूंकते और हाथ सारे शरीर पर फ़ेरते और ऐसा तीन बार करते थे और फिर दाईं ओर मुंह करके यह ज़िक्र पढ़ते-

اَللّٰھُمَّ اَسْلَمْتُ نَفْسِیْ اِلَیْکَ وَوَجَّھْتُ وَجْھِیْ اِلَیْکَ، وَفَوَّضْتُ اَمْرِیْ اِلَیْکَ رَغْبَۃً وَرَھْبَۃً اِلَیْکَ، وَاَلْجَاْتُ ظَھْرِیْ اِلَیْکَ لَا مَلْجَأَ وَلَا مَنْجٰی اِلَّا اِلَیْکَ، اٰمَنْتُ بِکِتَابِکَ الَّذِیْ اَنْزَلْتَ، وَنَبِیِّکَ الَّذِیْ اَرْسَلْتَ (तिर्मिज़ी किताबुद्दअवात)

इसी तरह प्रत्येक मोमिन को चाहिए और फिर चारपाई पर लेटकर दिल में سُبْحَانَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِہٖ سُبْحَانَ اللّٰہِ الْعَظِیْمِ या कोई अन्य ज़िक्र जारी रखना चाहिए। यहां तक कि इस हालत में आंख लग जाए। क्योंकि जिस हालत में व्यक्ति सोता है आमतौर पर वही स्थिति सारी रात उस पर गुज़रती है। इसलिए जो व्यक्ति तस्बीह और तहमीद करते हुए सोएगा मानो सारी रात इसी में लगा रहेगा। देखो महिलाएं या बच्चे अगर किसी दु:ख और पीड़ा में सोएं तो सोते सोते जब करवट बदलते हैं दर्दनाक और ग़मगीन आवाज़ निकालते हैं क्योंकि इस ग़म का जो सोते समय उन्हें था उन पर असर होता है। लेकिन अगर कोई तस्बीह करते हुए सोएगा तो जब करवट बदलेगा

उसके मुंह से तस्बीह की आवाज़ ही निकलेगी। यही कारण है कि क़ुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है कि मोमिन वह होते हैं कि-

تَتَجَافٰى جُنُوۡبُهُمۡ عَنِ الۡمَضَاجِعِ يَدۡعُوۡنَ رَبَّهُمۡ خَوۡفًا وَّ طَمَعًا ۡ وَّ مِمَّا رَزَقۡنٰهُمۡ يُنۡفِقُوۡنَ (अस्सजदा: 17)

अर्थात उनके पहलू बिस्तरों से उठे रहते हैं और वे भय और प्रलोभन से अल्लाह को पुकारते हैं और जो कुछ हम ने उन्हें दिया है उससे खर्च करते हैं। ज़ाहिर में तो यह बात सही नहीं लगती क्योंकि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी सोते थे और दूसरे सब मोमिन भी सोते हैं लेकिन मूल बात यह है कि चूंकि तस्बीह करते सोते हैं इसलिए उनकी नींद नींद नहीं होती बल्कि तस्बीह ही होती है और हालांकि वे सोते हैं लेकिन वास्तव में सोते नहीं। उनकी कमरें बिस्तरों से अलग रहती हैं और वह ख़ुदा की याद में संलग्न रहते हैं।

पांचवां तरीका

यह है कि सोने के समय सही इरादा कर लिया जाए कि तहज्जुद के लिए ज़रूर उठूंगा। इंसान के अंदर अल्लाह तआला ने यह शक्ति रखी है कि जब वह ज़ोर से अपने नफ्स को कोई आदेश करता है तो वह स्वीकार कर लेता है और यह एक ऐसी बात है जो सभी बुद्धिमान स्वीकार करते आए हैं। अतः तुम सोने के समय पक्का इरादा कर लो कि तहज्जुद के समय ज़रूर उठोगे। ऐसे में यद्यपि तुम सो जाओगे लेकिन तुम्हारी रूह जागती रहेगी कि मुझे आदेश मिला है कि अमुक समय जगाना है और ठीक समय पर अपने आप तुम्हारी आंख खुल जाएगी।

छठा तरीका

ऐसा है कि जिस के करने की केवल ऐसे ही व्यक्ति को अनुमति देता हूँ जो यह देखता है कि मेरा ईमान ख़ूब मज़बूत है और वह यह कि वितरों को इशा की नमाज़ के साथ न पढ़े बल्कि तहज्जुद के समय पढ़ने के लिए रहने दे। आमतौर पर यह बात पाई जाती है कि व्यक्ति फर्ज़ को खास तौर

से निभाता है मगर नफ्ल में सुस्ती कर जाता है। अतः जब नफ्लों के साथ वाजिब मिल जाऐंगे तो उसकी रूह कभी आराम नहीं करेगी जब तक कि उसे अदा न करे और इसका नतीजा यह होगा कि नफ्स सुस्ती नहीं करेगा। लेकिन अगर वितर पढ़े हुए हैं और तहज्जुद के समय आंख खुल भी जाए तो स्वयं कह देता है कि वितर तो पढ़े हुए हैं नफिल न पढ़े तो न सही। लेकिन जब यह विचार होगा कि वितर भी पढ़ने हैं तो ज़रूर उठेगा तो नफ्ल भी पढ़ लेगा। लेकिन जैसा कि मैंने पहले बताया है उसके लिए शर्त है कि ईमान बहुत मज़बूत हो। जब ईमान मज़बूत होगा तो वितरों के लिए ज़रूर उठेगा। अन्यथा वितरों के पढ़ने से भी वंचित रहेगा।

सातवां तरीका

भी उन्हीं लोगों के लिए है जो रूहानियत (अध्यात्म) में बहुत बढ़े हुए हैं और वह यह कि इशा की नमाज़ के बाद नफिल पढ़ना शुरू कर देते हैं और इतनी देर तक पढ़ें कि नमाज़ में ही नींद आ जाए और इतनी नींद आए कि सहन न की जा सके उस समय सोए। बावजूद इसके कि इसमें अधिक समय लगेगा लेकिन जल्दी नींद खुल जाएगी यह रूहानी व्यायाम होता है।

आठवां तरीका

वह है जो हमारे सूफ़िया में रिवाज था। मैंने उसकी ज़रूरत महसूस नहीं की लेकिन है लाभदायक और वह यह है कि जिन दिनों में अधिक नींद आए और समय पर आंख न खुले उनमें नरम बिस्तर हटा दिया जाए।

नौवां तरीका

यह है कि सोने से कई घंटे पहले खाना खा लिया जाए। अर्थात मग़रिब से पहले या मग़रिब की नमाज़ के बाद तुरंत। बहुत बार ऐसा होता है कि मनुष्य की रूह चुस्त होती है लेकिन शरीर सुस्ती कर देता है। शरीर एक बंधन है जो रूह से चिमटा हुआ है जब यह बंधन भारी हो जाए तो रूह को दबा लेता है। इसलिए सोने के समय पेट भरा नहीं होना चाहिए क्योंकि इसका असर दिल पर बहुत पड़ता है और व्यक्ति को सुस्त कर देता है।

दसवां तरीका

यह है कि जब इंसान रात को सोए तो ऐसी स्थिति में न हो कि जुनबी हो या उसे कोई गंदगी लगी हो। बात यह है कि पवित्रता से फरिश्तों का गहरा संबंध होता है और वे गंदे आदमी के पास नहीं आते बल्कि दूर हट जाते हैं। इसीलिए नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने जब एक बदबूदार चीज़ खाने के लिए लाई गई तो आप ने सहाबा से कहा कि तुम खा लो मैं नहीं खाता। सहाबा ने कहा कि हम नहीं खाते। आपने कहा तुम खा लो मेरे साथ तो फरिश्ते बातें करते हैं इसलिए नहीं खाता क्योंकि उन्हें ऐसी चीज़ों से नफरत है।

तो गंदगी को फरिश्ते बहुत नापसंद करते हैं। हज़रत ख़लीफतुल मसीह अव्वल सुनाते थे कि एक बार मैंने खाना खाया और हाथ धोए बिना सो गया। रो'या (स्वप्न) मैं मैंने देखा कि मेरे भाई साहब आए हैं और उन्होंने मुझे क़ुरआन हकीम देना चाहा लेकिन जब मैं हाथ लगाने लगा तो कहा कि हाथ न लगाना तुम्हारे हाथ साफ नहीं हैं। तो बदन साफ होने का दिल पर बहुत प्रभाव पड़ता है। सफाई की हालत में सोने वाले को फरिश्ते आकर जगा देते हैं लेकिन अगर सफाई में अंतर हो तो पास नहीं आते। यह तरीका शरीर की सफाई के बारे में है।

ग्यारहवां तरीका

यह है कि बिस्तर पाक व साफ हो बहुत लोग इस बात की परवाह नहीं करते लेकिन याद रखना चाहिए कि बिस्तर की पवित्रता का रूहानियत से विशेष संबंध है इसलिए इसका विशेष ध्यान रखना चाहिए।

बारहवां तरीका

ऐसा है कि लोगों को इस पर अमल करने की वजह से नुकसान पहुंच सकता है। हाँ विशेष लोगों के लिए हानिकारक नहीं है और वह यह कि पति और पत्नी एक बिस्तर में न सोएँ। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सोते थे लेकिन आपकी शान बहुत ऊंची और बुलंद है। आप पर इसका कोई असर नहीं हो सकता था। लेकिन अन्य लोगों को ध्यान देना चाहिए। बात

यह है कि शारीरिक काम वासना का प्रभाव जितना हो उतना ही अध्यात्म को बंद कर देता है। यही कारण है कि शरीयत इस्लाम ने कहा है कि खाओ पियो लेकिन सीमा से न बढ़ो। क्यों न बढ़ो, इसलिए कि क्योंकि कामवृति अधिक बढ़कर रूहानियत को नुकसान पहुंचाएगी। तब वे लोग जो अपने नफ्स पर नियंत्रण रखते हैं वे अगर इकट्ठे सोएं तो कोई हर्ज नहीं है लेकिन आम लोगों को इससे बचना चाहिए। और वे लोग जिन्हें अपने विचारों पर पूरा पूरा नियंत्रण न हो उन्हें एक साथ नहीं सोना चाहिए। इस तरह उन्हें काम वासना के विचार आते रहेंगे और कई बार ऐसा भी होता है कि सोते सोते संबंध बनाने या प्यार करने लग जाते हैं इस तरह रूहानियत पर बुरा असर पड़ता है और उठने में सुस्ती हो जाती है।

तेरहवां तरीका

ऐसा उच्च है कि जो न केवल तहज्जुद के लिए उठने में बहुत बड़ी सहायता करने वाला और सहायक है बल्कि उस पर अमल करने से व्यक्ति बदी और बुराइयों से भी बच जाता है और वह यह है कि सोने से पहले देखना चाहिए कि हमारे दिल में किसी के संबंधित वैर या द्वेष तो नहीं है अगर हो तो उसे दिल से निकाल देना चाहिए।

इसका नतीजा यह होगा कि नफ्स के शुद्ध होने की वजह से तहज्जुद के लिए उठने की तौफ़ीक़ मिल जाएगी चाहे इस प्रकार के विचार उन पर भी काबू पा ही लें। लेकिन रात में सोने से पहले ज़रूर निकाल देने चाहिए और दिल को बिल्कुल खाली कर लेना चाहिए। इसमें हर्ज ही क्या है। अगर कोई ऐसे विचारों में सांसारिक लाभ समझता है तो दिल को कहे कि दिन को फिर याद रख लेना रात में सोने के समय किसी से लड़ाई तो नहीं करनी कि उन्हें दिल में रखा जाए। प्रथमतः तो ऐसा होगा कि अगर एक बार अपने दिल से किसी विचार की जड़ काट दी जाएगी तो फिर वह आएगा ही नहीं। दूसरे इस प्रकार विचार रखने से जो नुकसान पहुंचना होता है उससे व्यक्ति सुरक्षित हो जाता है। यह एक सिद्ध बात है कि एक बात जिस कदर अधिक समय दूसरे के साथ रहती है उतना ही अधिक अपना प्रभाव उस पर करती है। जैसे

यदि स्पंज को पानी से भर कर किसी चीज़ पर जल्दी से फेर कर हटा लिया जाए तो वह बहुत थोड़ी गीली होगी। लेकिन अगर देर तक उस पर रखा जाए तो वह बहुत अधिक भीग जाएगी इसी प्रकार जो विचार मनुष्य को देर तक रहें वे उसके दिल में अधिक बस जाते हैं और सोते समय जिन विचारों को इंसान अपने दिल में रखे उन्हें उसकी रूह सारी रात दुहराती रहती है। दिन में अगर कोई ऐसा विचार हो तो वह इतना हानिकारक नहीं होता जितना रात के समय का। क्योंकि उनके दूसरे कामों में संलग्न होने के कारण वह भुला देता है लेकिन रात को बार बार आता है। अत: सोते समय यदि कोई बुरा विचार हो तो उसे निकाल देना चाहिए ताकि वे दिल में गड़ न जाए। क्योंकि अगर गड़ गया तो फिर उसका निकलना बहुत मुश्किल होगा। फिर अगर रात को जान ही निकल जाए तो इस बुराई के विचार से तौबा करने का मौका भी नहीं मिलता। इस प्रकार नफ्स को डराना चाहिए और जब एक बार विचार निकल जाएगा तो फिर इससे निजात मिल जाएगी। अत: सोते समय नफ्स में बुरे विचार नहीं रहने देने चाहिए। जब इस तरह दिल को शुद्ध व साफ करके कोई सोएगा तो तहज्जुद के समय उठने की उसे ज़रूर तौफ़ीक़ मिल जाएगी।

नमाज़ में ध्यान बनाए रखने के तरीक़े

अब मैं बताता हूँ कि नमाज़ में किस तरह ध्यान बना रह सकता है। इस से संबंधित कई लोग हमेशा पूछा करते हैं आज मैं उसके तरीके बताता हूँ। कुछ तो ऐसे होंगे जिन्हें आप उपयोग में लाते हैं। मगर वास्तव में उनसे काम नहीं लेते और जो काम लेते हैं वे ज़रूर लाभ भी उठाते होंगे असल बात यह है कि शरीयत ने ध्यान स्थापित रखने के लिए दुआ में ही कुछ नियम बता दिए हैं लेकिन ना जानने के कारण अक्सर लोग उनसे लाभ नहीं उठा सकते। उनके अतिरिक्त कुछ तरीके मैं ऐसे बताऊंगा जिनसे लोग आमतौर पर अपरिचित हैं और उनका पालन नहीं करते। हालांकि उन का पालन करने से दुआ में ध्यान कायम रह सकता है। पहली किस्म के तरीकों को बयान करने से पहले इतना बता देना चाहता हूँ कि अल्लाह तआला ने इंसान के अंदर एक ऐसी बात रखी है कि जब वह किसी चीज़ का उपयोग कर रहा

हो और साथ साथ इसका लाभ भी सोचता जाए और उस पर विश्वास रखे तो उसे बहुत अधिक लाभ होता है। यूरोप में सैंडो (नामक) व्यायाम का शिक्षक गुज़रा वह लिखता है कि स्वास्थ्य और शक्ति के लिए व्यायाम करो मगर साथ ही यह भी विचार करो कि हमारे हाथ मजबूत और पट्ठे सख़्त हो रहे हैं। वास्तव में कसरत से हाथ मज़बूत होते हैं मगर जब यह बात व्यायाम समझकर की जाए कि इसका असर शरीर पर क्या पड़ रहा है तो इस आशय को स्वीकार करने के लिए शरीर और भी तैयार हो जाता है और अगर यह विचार न रखा जाए तो बहुत सा प्रभाव नष्ट हो जाता है और लाभ अनुपात में बहुत कम हो जाता है।

पहला तरीका

इस्लामी शरीअत ने भी ध्यान बनाए रखने के कुछ कानून निर्धारित किए हुए हैं। इनमें पहला कानून वुज़ू है जो प्रत्येक नमाज़ पढ़ने वाले को करना पड़ता है। इसमें यह हिकमत है कि इंसान के विचार और भावनाओं को दूसरों तक पहुंचाने के अल्लाह तआला ने कुछ माध्यम बनाए हैं उनमें से एक अअसाब (तंत्र) की प्रणाली है। इन के द्वारा मनुष्य के विचार और भवानाओं का प्रभाव दूसरी चीज़ों पर पड़ता है और वह एक रास्ता के तौर पर है। यही कारण है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आयतल कुर्सी पढ़ कर अपने शरीर पर फूंका करते थे। क्या यह व्यर्थ ही था? कभी नहीं। बल्कि मूल बात यह है कि विचारों का प्रभाव पट्ठों के द्वारा, आवाज़ के द्वार, फूंक के माध्यम से, सोच से स्थानांतरित होता है। अतः रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इन तीनों तरीकों को जमा कर लेते थे। आयतल कुर्सी मुंह से पढ़ते फिर हाथ में फूंकते फिर हाथ सारे शरीर पर फेर लेते। अतः आवाज़, इन्द्रियां, नज़र और फूंक आदि विचारों के बाहर निकलने के रास्ते हैं इसलिए दम करना भी नेक व्यक्तियों से साबित है बल्कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से भी रिवायत है। अतः क्योंकि इन्द्रियों द्वारा विचार निकलते और फैल जाते हैं उन्हें नियंत्रण में रखने के लिए आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वुज़ू का आदेश दिया है

और चूंकि उनके निकलने के बड़े बड़े केंद्र हाथ, पांव और मुँह हैं और अनुभव किया गया है कि जब उन पर पानी डाला जाए तो विचारों की तरंग जो उनसे निकल रही होती है वह बंद हो जाती है और विचार निकलने रुक जाते हैं। यह एक सिद्ध बात है और वज़ू के उद्देश्यों में एक यह उद्देश्य भी है। वज़ू में और भी कई एक हिकमतें हैं लेकिन एक यह भी है कि इस तरह विचार की तरंग रुक जाती है और जब तरंग रुक जाती है तो आराम हासिल हो जाता है और जब शांति हो जाती है तो ध्यान बना रह सकता है। अत: वज़ू ध्यान बनाए रखने के लिए एक उच्च स्तर का माध्यम है लेकिन जब वुज़ू करने बैठो तो साथ ही यह भी ख़याल रखें कि हम ऐसा बिखरे हुए विचारों को रोकने के लिए कर रहे हैं। जब ऐसा होगा तो नमाज़ में शान्ति प्राप्त हो जाएगी और विचार तुम्हारे ध्यान को भटका नहीं सकेंगे।

दूसरा तरीका

ध्यान स्थिर रखने का वह है जो इस्लामी शरीअत ने मस्जिद में नमाज़ पढ़ने का बताया है। इंसान की विशेषता है कि जब वह एक बात को देखता है तो उस से उसे दूसरी का विचार पैदा हो जाता है। जैसे एक व्यक्ति ज़ैद से मिलता है तो उसके लड़के बकर से संबंधित भी पूछता है हालांकि बकर उसके सामने नहीं होता मगर ज़ैद को देखकर ही उसे बकर भी याद आ जाता है। तो मानव मस्तिष्क की बनावट ही ऐसी है कि जब एक बात उसके सामने आए तो इससे जुड़ी दूसरी चीज़ों की भी उसे याद आ जाती है। अत: अगर इंसान एक ऐसी जगह नमाज़ पढ़े जिस का नमाज़ से विशेष संबंध न हो तो उसे कोई विशेष बात याद न आएगी लेकिन जब ऐसी जगह नमाज़ पढ़े जहां सुबह और शाम ख़ुदा तआला की इबादत की जाती है और जो ख़ुदा का घर कहलाता है तो उसे ज़रूर यह विचार आएगा कि मैं उस ख़ुदा के समक्ष खड़ा हुआ हूँ जिस की इबादत करने के लिए यह जगह बनाई गई है और मुझे लगता है कि मुझ पर फर्ज़ है कि सच्चे दिल से उसकी आज्ञाकारिता और अनुपालन करूं। यही कारण है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया है कि मुसलमानों को चाहिए कि अपने घरों में नमाज़

पढ़ने के लिए एक विशेष जगह निर्धारित कर लें और वहाँ नमाज़ पढ़ने के अतिरिक्त और कोई काम न करें जिससे कि वहाँ नमाज़ पढ़ते हुए यह विचार आए कि यह अल्लाह तआला की इबादत करने का स्थान है। (मिशक़ात किताबुल मनासिक) संभव है कि आप में से कुछ लोगों के दिलों में मस्जिद में जाकर भी कभी यह विचार न आया हो। लेकिन अब जबकि मस्जिद में नमाज़ पढ़ने की हिकमत का पता चल गया और यह विचार लेकर मस्जिद में नमाज़ पढ़ने के लिए गए तो आपके विचार तुरंत रुक जाएंगे और सकून मिल जाएगा।

तीसरा तरीका

क़िबले की ओर मुँह करने का जो आदेश है वह भी ध्यान बनाए रखने के लिए बहुत सहायक होता है। मक्का में कई एक विशेषताएं हैं। इस जगह एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी और बच्चे को बिना खाने पीने और बिना आबादी और किसी सुरक्षा के ख़ुदा की आज्ञा के अधीन छोड़ दिया था और चूंकि यह काम उसने ख़ुदा के लिए किया था अल्लाह तआला ने उस की नस्ल को इस कदर बढ़ाया कि आकाश के तारे की तरह गिनी नहीं जा सकती तो उसकी नस्ल से कई एक नबी बनाए गए और अंत में वह व्यक्ति जो सारी दुनिया की तरफ नबी होकर आया वह भी उसी की नस्ल में से था। तो जब कोई मक्का की ओर मुँह करके दुआ के लिए खड़ा होता है और उसे यह बात भी मालूम हो कि इधर मुंह करके नमाज़ पढ़ना क्यों निर्धारित किया गया है तो उस पर तुरंत हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की घटना का प्रभाव होता है और इस बात की ओर ध्यान पैदा हो जाता है कि मैं जिस ख़ुदा की इबादत करने के लिए खड़ा हुआ हूं वह बड़ी शान और बड़ी कुदरत वाला है। जब उसे यह विचार पैदा हो जाता है तो उसके बिखरे विचार दूर हो जाते हैं और अल्लाह तआला के भय और महिमा से दबकर बैठ जाते हैं।

चौथा तरीका

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अज़ान निर्धारित की है। जब ज़ोर से अल्लाह अकबर, अल्लाह अकबर कहा जाता है तो यद्यपि

उसी समय नमाज़ शुरु नहीं हो जाती परन्तु नमाज़ पढ़ने वालों को सूचित किया जाता है कि तुम खूब सोच समझकर मस्जिद में नमाज़ पढ़ने के लिए आ जाना। क्योंकि तुमने बड़े महान ख़ुदा के सामने पेश होना है। अत: जब कोई अज़ान सुनेगा तो उस पर अल्लाह तआला की महानता और शान का विशेष रौब होगा और इस वजह से नमाज़ में ध्यान बना रहेगा। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया है कि अज़ान इसलिए दी जाती है कि शैतान को भगा दे और हदीस में आया है कि जब अज़ान होती है तो शैतान दूर भाग जाता है। अत: जब कोई इस बात को ध्यान में रखता है कि अज़ान में जो विषय बयान किया गया है इसका यह उद्देश्य है कि अल्लाह तआला के भय और महिमा की ओर ध्यान हो तो उसे उसकी हिक्मत भी याद आ जाएगी। जिन लोगों ने आज यह हिकमत की बात सुनी है वे जब अज़ान सुनेंगे तो यह बात याद आ जाएगी और जब याद आएगी तो प्रभाव भी होगा और यह नियम है कि जब एक विचार आए तो दूसरे विचार दूर हो जाते हैं। अत: जब अल्लाह तआला की महानता और महिमा के विचार पैदा होंगे तो दूसरे विचार हट जाएंगे और ध्यान केन्द्रित हो जाएगा।

पांचवां तरीका

इक़ामत है। यह भी अल्लाह तआला की महानता और शौकत की ओर आकर्षित करती है और अज़ान से संबंधित जो हिक्मत समझाई है वही इसमें भी है। इकामत से संबंधित भी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमाते हैं कि उसकी आवाज़ से शैतान भाग जाता है (मुस्लिम किताबुस्सलात) और इसका मतलब यही है कि इस के माध्यम से शंकाएं दूर हो जाती हैं और अल्लाह तआला की ओर ध्यान पैदा होता है।

छठा तरीका

सफ को सीधा करना है। शारीरिक नियमितता विचार में भी नियमितता पैदा कर देती है और उन्हें भटकने नहीं देती है और जब शारीरिक रूप से पंक्ति सीधी की जाती है तो आंतरिक जोश भी एक पंक्ति में संलग्न हो जाते हैं। फिर वह शक्ल क्या ही भयानक होती है कि सब लोग चुपचाप

और ख़ामोश बादशाहों के बादशाह के सामने खड़े होते हैं। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि सफों को सीधा करो वरना तुम्हारे दिल टेढ़े हो जाएंगे (मुस्लिम किताबुस्सलात) ठीक सफ का क्या असर होता है, यही कि ज़ाहिर का प्रभाव चूंकि अंदरून पर होता है। इसलिए अगर ज़ाहिरी तौर पर बाकायदगी न हो तो अंदरूनी तौर पर बाकायदगी में भी अंतर आ जाता है।

सातवां तरीका:

नमाज़ पढ़ने की निय्यत (इरादा) है, क्योंकि जब मनुष्य अपने नफ्स को बता देता है कि इस काम के लिए मैं खड़ा होने लगा हूँ तो ध्यान उसकी तरफ ही रहता है। निय्यत का यह मतलब नहीं कि कहा जाए कि पीछे इमाम के इतनी रक्'अत नमाज़ मुंह काबा शरीफ़ की तरफ आदि बल्कि मन में ही नमाज़ पढ़ने का इरादा करना चाहिए। एक आदमी के बारे में कहते हैं कि उसे निय्यत करने का जुनून हो गया था वह अगर किसी पिछली पंक्ति में खड़ा होता और नीयत करता कि "पीछे इमाम के" तो उसे विचार आता कि इमाम के पीछे तो हूं नहीं मेरे आगे कोई और व्यक्ति है इसलिए वह आगे जाकर कहता पीछे उस इमाम के, फिर उसे संदेह पड़ता कि मैं तो अभी भी इमाम के पीछे नहीं हूँ इसलिए वह इमाम के पीछे जाकर खड़ा होता और फिर उसे हाथ लगा कर कहता कि पीछे इस इमाम के।

इस प्रकार के भ्रम में जो लोग पड़े हुए हैं वे भी ग़लती करते हैं और नतीजा बहुत बुरा होता है। निय्यत क्या हुई मानो मुसीबत हो गई। निय्यत वास्तव में हृदय से होती है मगर कुछ लोगों को खड़े होते समय पता ही नहीं होता कि क्या करने लगे हैं, अत: जब तुम नमाज़ पढ़ने लगो तो नमाज़ पढ़ने का विचार भी कर लो और समझो कि क्या करने लगे हो। जब यह बात समझ लोगे तो उसी समय तुम्हारे अंदर विनम्रता उत्पन्न होनी शुरू हो जाएगी और जब विनम्रता उत्पन्न हो जाएगी तो ध्यान भी क़ायम रह सकेगा।

आठवां तरीका:

जमाअत के साथ नमाज़ है, इस तरह नमाज़ पढ़ते हुए अल्लाह तआला

की महानता की तरफ आकर्षित करने वाले शब्द मानव के कान में इमाम की तरफ से डाले जाते हैं और जो व्यक्ति लापरवाह हो और अन्य विचारों में पड़ जाए उसे ठकोर दिया जाता है। जैसे जब अल्लाहो अकबर कहा जाता है तो मानो उसे इस बात से सूचित किया जाता है कि देखो संभलकर खड़े होना जिसके सम्मुख खड़े होने लगे हो वह बहुत बड़ा है। फिर जब खड़े होने में कुछ समय बीत जाता है और किसी के दिल में तरह तरह के विचार आने लगते हैं तो फिर इमाम ज़ोर से कह देता है अल्लाहो अकबर अल्लाह तआला सबसे बड़ा है फिर जब लापरवाही आने लगती है तो समिअल्लाह होलिमन हमेदा की आवाज़ कान में डाली जाती है कि अल्लाह तआला उस व्यक्ति की बातें सुनता और स्वीकार करता है जो उसकी स्तुति करता है। और इस तरह उसे आकर्षित किया जाता है कि अगर कुछ लाभ प्राप्त करना चाहते हो तो अल्लाह तआला की स्तुति करो अन्यथा यूं ही समय बर्बाद होगा। अत: बार बार इमाम नमाज़ पढ़ने वालों को ध्यान दिलाता और होशियार करता रहता है यही कारण है कि इमाम को नमाज़ पढ़ने वालों पर प्राथमिकता है क्योंकि वह उन्हें बार बार ध्यान दिलाता है कि तुम सबसे बड़े राजा के सामने खड़े हो सावधान होकर खड़े रहना।

नौवां तरीका

यह है कि नमाज़ के अदा करने के लिए एक ही स्थिति में नहीं रखा गया बल्कि विभिन्न रूपों में रखा है अगर कोई नमाज़ पढ़ते हुए लापरवाह हो या अन्य विचार में डूब जाए तो उसका रुकूअ करना और सिज्दा में जाना उसे नमाज़ की ओर ध्यान दिलाता है यद्यपि कोई आदत के रूप में ही रुकूअ करे या सिज्दा में जाए तो फिर भी हरकत एक ऐसी चीज है कि लापरवाह को सावधान कर देती है। दूसरे धर्मों की इबादतों में यह बात नहीं है। यह विशेषता केवल इस्लाम को ही प्राप्त है।

दसवां तरीका

फर्ज़ों से पहले और बाद में सुन्नत पढ़ना है। प्रकृति का नियम है कि जब कोई काम होने वाला हो तो उसका कुछ असर उसके प्रकट होने से पहले

और कुछ बाद में घटित हो जाता है। जैसे जब सूरज चढ़ने लगे तो यद्यपि वह अभी निकला हुआ न हो तो भी प्रकाश फैल जाता है इसी तरह इसके डूबने के बाद भी कुछ समय तक प्रकाश रहता है। लेकिन जो काम इच्छाओं के अनुसार हो या इसमें कोई सुख मिला हो या इसके न होने में नुकसान की आशंका हो वह दूसरे काम की तुलना में कम असर रखता है और उस पर हावी हो जाता है। जैसे एक व्यक्ति कोई ऐसा काम कर रहा है कि जिस में उसे कोई विशेष लाभ नहीं दिख रहा है और इस काम के बाद उसने कोई ऐसा काम करना है जिसमें उसे विशेष लाभ की उम्मीद है या न होने पर किसी नुकसान का ख़तरा है या वह काम उसकी इच्छाओं के अनुसार है जिस काम में यह संलग्न है इस के करते समय भी दूसरे काम की तरफ ही विचार हावी रहेंगे और उसी की ओर ध्यान रहेगा। जैसे एक कर्मचारी दफ्तर का काम कर रहा हो तो अगर दफ्तर से फ़राग़त के बाद उसे कोई महत्त्वपूर्ण काम जो उस का ज़ाती है करना है तो दफ़्तर का समय खत्म होने से एक दो घंटे पहले ही उस के विचार इस तरफ आकर्षित हो जाएंगे। यदि कार्यालय के काम में कोई महत्वपूर्ण काम उसका ध्यान अपनी तरफ खींचने का कारण हुआ है तो कार्यालय समाप्त होकर भी रास्ते में और फिर कुछ समय तक घर में भी उसी की ओर ध्यान आकर्षित रहेगा और कुछ देर के बाद उसके विचार उन मामलों की ओर आकर्षित होंगे जिनमें वह अभी व्यस्त है। इसी हिक्मत की वजह से रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फर्ज़ो से पहले और बाद में सुन्नतें निर्धारित फ़रमा दी हैं ताकि अगर नमाज़ पढ़ने से पहले कोई विचार हो तो वह फर्ज़ों को ख़राब न करें बल्कि सुन्नतों को अदा कर के उन्हें दबा कर इन्सान संतुष्ट हो जाए। और फिर फर्ज़ों की तरफ पूरी तरह ध्यान कर सके। इसी तरह फर्ज़ों के बाद भी सुन्नत निर्धारित कर दिए ताकि अगर नमाज़ के बाद कोई आवश्यक काम हो तो कार्य के अंत से पहले यह विचार दिल में आकर नमाज़ ख़राब न करें। बल्कि व्यक्ति संतोष के साथ नमाज़ पढ़ ले। क्योंकि जैसा कि मैंने बताया है यह विचार आमतौर पर तभी आकर सताते हैं, जबकि पहला काम

समाप्त होने को हो और दूसरे के शुरू करने की योजना बना रहे हो जब व्यक्ति यह समझता है कि मैं अभी फ्री नहीं हुआ बल्कि अभी सुन्नते पढ़नी हैं तो उसके विचार दबे रहते हैं और सुन्नतों के निर्धारित करने की हिकमतों में यह एक बहुत बड़ी हिक्मत है। अत: रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने समय के अन्तर से सुन्नतें भी निर्धारित की हैं। ज़ुहर की नमाज़ के समय चूंकि दूसरे कामों में बड़ी व्यस्तता का समय होता है इसलिए चार या दो सुन्नतें पहले, दो या चार बाद में रख दीं। मानो फर्ज़ों की सुरक्षा के लिए यह दो सैनिक निर्धारित कर दिए कि उनमें जो विचार आना चाहें उन्हें रोक दें। असर की नमाज़ से पहले सुन्नतें नहीं रखीं, हाँ नफिल रखे हैं। कोई चाहे पढ़े या न पढ़े। इस का कारण यह है कि असर के समय एक दृष्टि से मनुष्य दूसरे कामों से फारिग़ हो जाता है। दूसरे क्योंकि सब काम ख़त्म करने का समय होता है इसलिए इस समय थोड़ी नमाज़ रखी मगर अस्र के बाद से मग़रिब तक ज़िक्र रखा है। जैसा कि मैं पहले बता आया हूँ मग़रिब की नमाज़ से पहले सुन्नतें इसलिए नहीं रखीं कि समय बहुत तंग है हाँ बाद में दो सुन्नतें रख दीं क्योंकि नमाज़ मग़रिब के बाद आमतौर पर खाना खाया जाता है और इसी प्रकार के काम होते हैं। यह सुन्नतें उन कार्यों के विचार से फर्ज़ों की रक्षा करती हैं. इशा की नमाज़ से पहले सुन्नतें नहीं रखीं क्योंकि इस नमाज़ से पहले जो काम आमतौर पर मनुष्य करता है वह ऐसे नहीं होते कि उनके प्रभाव बाद में भी कायम रहें। मगर नफ्ल रख दिए कि अगर कोई चाहे और ज़रूरत हो तो पढ़ ले लेकिन इशा के बाद चूंकि सोना होता है और सारे दिन काम के बाद तबियत आराम की तरफ आकर्षित होती है इसलिए बाद में दो सुन्नतें और तीन वितर निर्धारित कर दिए हैं, वितर पिछले समय में भी अदा किए जा सकते हैं।

सुबह की नमाज़ से पहले दो सुन्नतें रखी गई हैं क्योंकि नींद से उठने की वजह से दुआ में लापरवाही न हो। वह सुन्नतें लापरवाही और नींद के विचारों को रोक देती हीं। बाद में सुन्नतें नहीं रखीं क्योंकि बाद में सूरज निकलने तक की अवधि में कोई विशेष काम नहीं हो सकता हाँ ज़िक्र रखा

है। यह तो वह हैं जो शरीयत ने नमाज़ में ध्यान बनाए रखने के लिए दुआ के साथ जोड़ दिए हैं। लेकिन उनसे लाभ तभी प्राप्त हो सकता है जब व्यक्ति उन्हें समझने की कोशिश भी करे। इसी लिए मैंने उन्हें वर्णन किया है ताकि आप लोग इससे परिचित हों और लाभ उठाएं और 'इंशा अल्लाह तआला' जो लोग इन हिकमतों को याद रखकर उन पर अमल करेंगे वे ज़रूर लाभ उठाएंगे। हां यह बात ख़ूब याद रखनी चाहिए कि मानव शरीर के जिस तरह जोड़ होते हैं। इसी तरह कयाम रकूअ सिज्दा आदि में जो शब्द कहे जाते हैं वे नमाज़ के जोड़ हैं। इन जोड़ों पर जो शब्द कहे जाते हैं उनकी तरफ विशेष ध्यान रखना चाहिए। यदि ऐसा किया जाएगा तो नमाज़ बहुत मज़बूत हो जाएगी अन्यथा गिर जाएगी।

अब मैं वे तरीके नमाज़ में ध्यान बनाए रखने के बताता हूँ जो नमाज़ की शर्तों में सम्मलिति नहीं हैं और न उन्हें शरीयत ने नमाज़ का घटक निर्धारित किया है लेकिन कोई उन तरीकों का पालन करे तो नमाज़ में ध्यान बना रह सकता है।

ग्यारहवां तरीका:

अगर नमाज़ पढ़ते हुए ध्यान कायम न रहे तो धीरे धीरे शब्दों को पढ़ो। मानव मस्तिष्क की बनावट इस प्रकार की है कि जो कुछ इसमें बार बार प्रवेश किया जाए उस को वह शीघ्र सामने ले आता है और जो कभी कभी उसके सामने आए उस को कठिनाई से सामने लाता है। जैसे ज़ैद को अगर हर रोज़ देखा जाए तो उसका विचार करने से तत्काल उस की शक्ल सामने आएगी। लेकिन अगर कभी कभी देखा हो तो उसका नाम सुनने या लेने के कुछ देर बाद उस की शक्ल मन में आएगी और वह भी पूरी तरह से साफ नहीं होगी। फिर देखो जो भाषा बचपन में सीखी जाए उस भाषा में कोई पंक्ति अगर इंसान बोले या सुने तो उसके शब्दों के साथ ही अर्थ उसके मन में आ जाते हैं। या अगर पानी का शब्द मन में आए तो बिना किसी देरी के पानी की वास्तविकता भी उस के मन में आ जाएगी या अगर रोटी शब्द वह किसी से सुने तो बिना किसी देर के रोटी के अर्थ उसके मन में उपस्थित हो

जाएंगे। मगर अन्य भाषा में जिस पर पूरी तरह अधिकार न हो यह बात नहीं होती बल्कि शब्दों के सुनने के बहुत देर बाद मतलब मन में आते हैं। जैसे अंग्रेजी पढ़ने वाले बच्चे, जब तक वह अंग्रेज़ी के पूरे विशेषज्ञ नहीं हो जाते जब वह CAT अपनी पुस्तक में पढ़ेंगे तो शब्द की वास्तविकता उनके मन में कुछ देर बाद आएगी मगर बिल्ली कहने से तुरंत इस जानवर की तस्वीर उनके मन में आ जाएगी।

इसी कारण से चूंकि सिवाय अरबी भाषी लोगों के आमतौर पर मुसलमान अरबी भाषा से अनभिज्ञ होते हैं। नमाज़ में कई लोगों का ध्यान स्थापित नहीं रहता क्योंकि ध्यान तब कायम रह सकता है, जबकि मतलब भी मस्तिष्क में हाज़िर हों। लेकिन अरबी भाषा के न जानने के कारण से जिस समय वह अरबी इबारतें पढ़ रहे होते हैं साथ उनके अर्थ उनके मन में नहीं आते बल्कि अर्थ और शब्द आगे पीछे हो जाते हैं। जैसे जब एक व्यक्ति "इय्याक नअबुदु" कहता है तो उसके मन में इस वाक्य का अर्थ नहीं बल्कि "रहमान रहीम" या "मालिक यौमिद्दीन" के अर्थ आ रहे हैं जिसकी वजह से पूरी तरह ध्यान कायम नहीं रह सकता और न पूरी तरह नमाज़ से लाभ होता है। इसलिए उन लोगों को जो अरबी से अच्छी तरह परिचय नहीं रखते और इस पर उन्हें इतनी प्रवीणता नहीं कि मातृभाषा की तरह इस शब्द के साथ अर्थ भी ध्यान में हाज़िर हो जाएं उन्हें चाहिए कि जब वे नमाज़ पढ़ने लगें तो जब तक इस वाक्यांश के अर्थ जो वे पढ़ रहे हैं मन में न आ जाऐं आगे न चलें। जैसे वह बिस्मिल्लाह हिर्रहमानिर्रहीम जब पढ़ें तो जब तक इसका अर्थ अच्छी तरह ध्यान में न आ जाए "अल्हम्दोलिल्लाहि रब्बिल आलमीन" न कहें और जब तक इस आयत के अर्थ अच्छी तरह मन में न आ जाएं "अर्रहमानिर्रहीम" न कहें और इसी प्रकार सब आयतों के बारे में करें। क्योंकि अगर ऐसा न करेंगे तो शब्द कोई और उनकी ज़बान पर जारी होंगे और अर्थ किसी और के आते होंगे। जिस का नतीजा यह होगा कि विचारों में फैलाव पैदा होगा और अराजकता होगी और ध्यान न पैदा हो सकेगा। जो लोग अरबी भाषा जानते हैं वे भी अगर जल्दी जल्दी पढ़ते जाएं तो यद्यपि

अर्थ उनके मन में तुरंत आ जाऐंगे मगर दिल में जज़्ब होने का उन्हें मौका नहीं मिलेगा इसलिए उन्हें भी चाहिए कि क़ुरआन धीरे धीरे पढ़ें और अंतराल दे देकर आगे बढ़ें।

यह बात क़ुरआन में ही ज़रूरी नहीं बल्कि नसीहत भी ऐसे ही करनी चाहिए। एक बार अबु हुरैरा रज़ि अल्लाह जल्दी और ज़ोर से हदीस बयान कर रहे थे कि हज़रत आयशा ने कहा कि यह कौन है और क्या कर रहा है उन्होंने अपना नाम बताया और कहा कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीसें सुना रहा हूं। उन्होंने कहा क्या आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी इसी तरह बातें करते थे यह सुनकर वह चुप हो गए। अत: रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की यह सुन्नत है कि आप न केवल क़िरअत में बल्कि साधारण नसीहत में भी धीरे से काम लेते थे। अत: ध्यान बनाए रखने के लिए आप लोग भी इस आदेश और सुन्नत का पालन करें इस तरह ध्यान बड़ी उत्कृष्टता से स्थापित रहेगा क्योंकि यह गड़बड़ी न रहेगी कि ज़बान पर कुछ और है और दिल में कुछ और।

बारहवां तरीका

वह है जो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बताया है लेकिन इसमें अक्सर लोग कोताही करते हैं, कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया है कि जब कोई नमाज़ पढ़ने के लिए खड़ा हो तो अपनी नज़र सिजदा करने की जगह पर रखे। कई लोग ऐसे होते हैं जो खड़े होकर आंखें बंद कर लेते हैं और समझते हैं कि इस तरह हमारा ध्यान बना रहेगा हालांकि ध्यान आँखें खुली रखने से स्थापित रह सकता है। यही कारण है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया खड़े होने के समय सिजदा की जगह पर नज़र होनी चाहिए। हज़रत शहाबुद्दीन साहिब सोहरावर्दी अपनी पुस्तक 'अवारेफुल मआरिफ' में लिखते हैं कि रुकूअ में दोनों पांव के बीच में नज़र रखनी चाहिए (अवारिफुल मआरिफ जिल्द 2, पृष्ट 15) और मेरे निकट यह उचित है। इस तरह करने से नज़र को भी लाभ पहुंचता है और विनम्रता भी अधिक पैदा होती है। नज़र को सीमित

करने में एक बहुत बड़ी हिक्मत है और वह यह कि मनुष्य के पैदा करने में अल्लाह तआला ने यह बात रखी है कि अगर उसकी एक इन्द्री काम कर रही होती है तो बाकी इंद्री बिना काम के हो जाती हैं। जैसे जब आँखें कमाल व्यस्तता में हों तब कान बेहिस हो जाते हैं अत: जिस समय आंखें पूरी शक्ति के साथ किसी बात को देखने में व्यस्त हों तब यदि कोई आवाज दे रहा हो तो सुनाई नहीं देगा और जब कान पूरी तरह से किसी आवाज़ को सुनने में व्यस्त हों तो नाक की सूंघने की ताकत समाप्त हो जाती है जब नाक पूरी शक्ति के साथ एक खुशबू सूंघने में लगा हुआ होगा तो कान और आँखें अपना काम करना बंद कर देंगीं। अत: जब एक इन्द्री काम में लग जाती है और अपनी पूर्णता को पहुँच जाती है तो दूसरी इन्द्रियां काम नहीं करतीं। लेकिन जब सारी इन्द्रयिां बेकार हों और कोई भी अपने काम में व्यस्त न हो तो यह त्रुटि उत्पन्न होती है कि विभिन्न विचार जोश में आ जाते हैं। इसकी वजह यह है कि जब एक इन्द्री काम कर रही हो तो दूसरी इन्द्रयिों से संबंधित विचार नहीं आते। यही कारण है कि वह इन्द्री अन्य विचारों के आने को रोक देती है। अत: नमाज़ पढ़ते समय जब आंखें अपना काम कर रही होंगी और देखने में संलग्न होंगी तो विविध विचार मन में नहीं आऐंगे। यह बात आज एक भौतिक अनुभव के बाद पता चली है लेकिन देखो इस भौतिक ज्ञान को ध्यान में रखकर आज से तेरह सौ साल पहले रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नमाज़ पढ़ते समय आँखें खुली रखने का इरशाद फ़रमाया हुआ है। फिर आपने यह भी ध्यान में रखा है कि वह कौन सी इन्द्री है जो काम में लग जाए तो विविध प्रकार के विचारों से मनुष्य बच जाएगा। अगर नाक की इन्द्री से काम लिया जाता तो इसके लिए आवश्यक होता है कि पहले ख़ुशबू का प्रबंध किया जाता फिर नाक की इन्द्री कैद नहीं रखी जा सकती। विविध लोग जो नमाज़ में शामिल होते या पास से गुज़रते अगर कई खुशबुएँ उपयोग करने वाले होते तो ध्यान बजाय कायम रहने के विभिन्न ख़ुशबुओं के कारण एक से दूसरी ओर फिरता रहता। नाक की तरह कान की इन्द्री भी कैद में नहीं रखी जा सकती अर्थात यह बात मानव

अधिकार में नहीं कि जो बात चाहे सुने और जो बात सुनने से चाहे इनकार कर दे। बल्कि जितनी आवाज़ें एक समय में ऊंची हों सबको सुनने के लिए व्यक्ति मजबूर होता है बल्कि कई आवाज़ें अगर एक साथ ऊंची हो जाएं तो आदमी कोई बात नहीं सुन सकता। तो अगर कानों को काम करने दिया जाए तो वे या तो सभी आवाज़ों को सुनेंगी या बिल्कुल भी नहीं सुनेंगी मगर इन इन्द्रियों के विपरीत आँखें मानव के अधिकार में होती हैं उन्हें यह एक जगह पर रख सकता है और जिस चीज़ को देखना न चाहे उससे कोई बिना किसी परेशानी के नज़र हटा सकता है और जो कुछ देखना चाहिए उस पर कोई बिना किसी परेशानी के नज़र रख सकता है। अत: रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अल्लाह तआला के निर्देशानुसार नमाज़ में ध्यान बनाए रखने के लिए इसी इन्द्री को चुना और आदेश दिया कि नमाज़ में अपनी नज़र को सिज्दा की तरफ रखा करो। मगर साथ ही आदेश दिया कि सिज्दा के स्थान पर कोई सुंदर चीज़ न हो बल्कि देखने में बराबर हो अर्थात एक ही प्रकार की हो। जब एक मुसलमान अपनी नज़र को सिज्दा के स्थान पर रखेगा तो अव्वल तो सिज्दा का विचार उसके दिल पर हावी आकर उसे इबादत के विचार में संलग्न रखेगा। द्वितीय इस तरह उस की दूसरी इन्द्रियां जिनका नियम है कि या तो बिल्कुल बंद हो जाएं या बिल्कुल आज़ाद रहें, बंद हो जाऐंगी। तीसरा यह लाभ होगा कि चूंकि विचारों को तहरीक दिलाने वाले बाहरी मामले ही होते हैं और बाहरी मामलों की रिपोर्ट व्यक्ति को इन्द्रियों के द्वारा ही मिलती है लेकिन आँखें क्योंकि काम में लगा दी गई हैं इसलिए दूसरी इन्द्रियां एक सीमा तक शून्य हो जाएंगी और आंखों के सामने चूँकि कोई ऐसी बात न होगी जो नमाज़ के अतिरिक्त कोई और विचार पैदा कर सके इसलिए नमाज़ी का ध्यान नमाज़ की तरफ ही क़ायम रहेगा।

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से प्रमाणित है कि एक बार तस्वीर वाला पर्दा आप की नमाज़ की जगह के सामने लटकाया गया तो आप ने इसे हटवा दिया कि इससे ध्यान स्थापित नहीं रहता। (बुख़ारी

किताबुस्सलात) यह आदेश आपने अपनी उम्मत के लाभ के लिए दिया।

तेरहवां तरीका

जिस तरह मैंने बताया है कि जब कोई नमाज़ के लिए खड़ा हो तो उसकी निय्यत और इरादा करके खड़ा हो। इसी तरह उसे यह भी चाहिए कि वह इरादा करे कि मैं नमाज़ में किसी विचार को नहीं आने दूंगा। यूं तो हर कोई जानता है कि विचार नहीं आने देना चाहिए लेकिन पुरानी बात भूल जाया करता है इसलिए जब नमाज़ के लिए खड़ा हो तो उस समय याद कर ले कि मैं किसी और विचार को नमाज़ में नहीं आने दूंगा।

चौदहवां तरीका

जब मोमिन इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ने के लिए खड़ा हो तो इमाम की क़िरअत उसे जगाती और होशियार करती रहती है। मानो इमाम उसकी रक्षा कर रहा होता है। (इससे मालूम हो सकता है कि इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ने की कितनी ज़रूरत है) लेकिन जिस समय अकेला नमाज़ पढ़ने लगे तो इस उत्तम बात पर अमल करे जिस पर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, सहाबा किराम[रज़ि.] और महान सूफिया किराम[र.] करते थे। और वह यह कि कुछ आयतें खासकर अल्लाह तआला का भय पैदा करने वाली होती हैं उन्हें बार बार दोहराए। जैसे सूरे फातिहा पढ़ते समय "इय्याक नअबुदो व इय्याक नसतईन" बार बार कहे। यहां तक कि अगर उसका नफ्स इधर उधर के विचार में लगा हो तो नफ्स को शर्म आ जाए कि मुंह से तो अल्लाह तआला की ग़ुलामी और बन्दगी का दावा कर रहा हूँ और व्यवहार में इधर उधर भागता फिरता हूं।

पंद्रहवां तरीका

यह तरीका ऐसे लोगों के लिए बताता हूँ जिनकी निय्यत अधिक देर तक कायम नहीं रह सकती। जिस तरह एक बच्चे को थोड़ी थोड़ी देर के बाद दूध देने की आवश्यकता है क्योंकि वे अधिक देर तक भूख बर्दाशत नहीं कर सकते और एक साथ भोजन पचा नहीं सकते। उसी तरह कुछ लोगों को जल्दी जल्दी सहारे की आवश्यकता होती है वह इस तरह कि जब खड़े हों

तो यह इरादा कर लें कि रुकूअ तक कोई विचार नहीं आने देंगे और जब रुकूअ को जाएं तो कहें कि खड़े होने तक कोई विचार न आने दें। इस तरह हर स्थिति के समय नए इरादे कर लिया करें। इस से उन्हें एक ऐसी शक्ति प्राप्त हो जाएगी जिससे उनके बिखरे विचार दूर हो जाएंगे।

सोलहवां तरीका

यदि मनुष्य विचारों के आगे गिर जाए तो वे उसका पीछा नहीं छोड़ते। लेकिन अगर मुकाबला करे और कहे कि कभी नहीं आने दूंगा तो वे रुक जाते हैं। इसलिए चाहिए कि विचारों का ख़ूब मुकाबला किया जाए और जब कोई विचार आने लगे तो तुरंत उसे रोक दिया जाए जैसे किसी को विचार आने लगे कि मेरा बच्चा बीमार पड़ा है अब उसकी क्या हालत होगी तो शीघ्र यह कह कर रोक दे कि अगर यह विचार अपने मन में लाऊंगा तो बच्चा अच्छा नहीं हो जाएगा और यदि नहीं लाउंगा तो अधिक बीमार नहीं हो जाएगा इसलिए मैं यह लाता ही नहीं। इसी तरह प्रत्येक बात के बारे में करे यहां तक कि ऐसे विचारों पर नियंत्रण प्राप्त हो जाए।

सत्रहवां तरीका

जब घर में नफ्ल पढ़े जाएं तो इतने ज़ोर से क़िरअत पढ़नी चाहिए कि आवाज़ कानों तक पहुँचती रहे। इससे यह फायदा होता है कि कान चूंकि किसी चीज़ से तो बंद नहीं किए जाते इसलिए कुछ न कुछ काम करते हैं। जब आवाज़ से भी अल्लाह तआला का ज़िक्र हो रहा होगा है तो ध्यान अधिक स्थापित हो जाता है क्योंकि कान भी ज़िक्रे इलाही की तरफ आकर्षित हो जाते हैं। इस तरीका पर अधिकतर रात की दुआ में पालन करना चाहिए क्योंकि दिन के समय माहौल में एक शोर होता है और कानों से अगर काम लिया जाए तो बजाय लाभ के कई बार ध्यान भटक जाने का खतरा होता है।

अठारहवां तरीका

यह तरीका इस हिक्मत के अधीन है कि नया विचार हमेशा नई हरकत से पैदा होता है वे हरकतें जो नमाज़ में की जाती हैं उन में यही विचार पैदा होता है कि इबादत की जाए इसलिए उनसे कोई हर्ज नहीं है। लेकिन और

हरकतों का यह परिणाम होता है कि एक ओर ध्यान चला जाता है। इसलिए रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया है कि आवश्यक हरकत को छोड़कर नमाज़ पढ़ने की स्थिति में कोई हरकत नहीं करनी चाहिए। वास्तव में अनावश्यक गतिविधि से विचार बिखर जाते हैं जैसे किसी ने यूं ही कोट में हाथ लगा दिया। हाथ लगाते समय यह विचार आया कि यह कोट तो पुराना हो गया है नया बनवाना चाहिए। इस पर विचार आया कि कोट के लिए रुपया कहां से आए, वेतन तो बहुत थोड़ा है फिर यह कि वेतन मिले हुए भी देर हो गई फिर अगर अफसर की ग़लती से देर हो गई तो अफसर को बुरा भला कहेगा और उन विचारों में ही डूब जाएगा कि अब मैं उसके साथ ऐसा करूँगा तो यूं करूंगा इसी तरह करते अस्सलामो अलैकुम वरहमतुल्लाह की आवाज़ आ जाएगी और वह भी सलाम फेर देगा। तो चूंकि नई गतिविधि एक नया विचार पैदा कर देती है इसलिए रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया है कि नमाज़ में कोई नई हरकत नहीं करनी चाहिए। और यहां तक फरमाया कि अगर सिज्दा के स्थान पर कंकड़ पड़े हों तो उन्हें भी नहीं हटाना चाहिए और अगर बहुत असुविधा हो तो एक बार हटा देना चाहिए। अत: नमाज़ पढ़ते हुए इस प्रकार की गतिविधियों से पूर्ण रूप से बचना चाहिए।

उन्नीसवां तरीका

क़याम और रुकूअ और सज्दा की स्थिति में फुर्ती रखनी चाहिए। अर्थात जब खड़ा हो तो मज़बूती और होशियारी से खड़ा हो। यह नहीं कि एक पैर पर बोझ डाल कर दूसरे को ढीला छोड़ दिया जाए क्योंकि जब सुस्ती धारण की जाती है तो दुश्मन कब्ज़ा पा लेता है। फिर ज़ाहिरी फुर्ती का प्रभाव भीतरी फुर्ती पर भी पड़ता है इसलिए रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आदेश दिया है कि सभी हरकतों में चुस्त रहना चाहिए।

बीसवां तरीका

कुछ सूफ़ियों ने इसमें सीमा से बढ़ जाने से काम लिया है। यद्यपि मैं सीमा से बढ़ जाने को पसंद नहीं करता लेकिन मोमिन लाभ उठा सकते हैं।

जुनैद बग़दादी^र एक बड़े बुज़ुर्ग गुज़रे हैं, शिबली^र उनके शिष्य थे जो बहुत श्रद्धा और अल्लाह तआला का भय रखते थे। आप एक प्रांत के गवर्नर थे। एक बार बादशाह के दरबार में जो आए तो एक बड़े सरदार को जिसने कोई बहुत बड़ी सेवा की थी उनके सामने एक इनाम के रूप में लिबास दिया गया। उस सरदार को कुछ कष्ट था इसलिए उसके नाक से पानी बह गया। रूमाल लाना भूल गया था। बादशाह से नज़र बचाकर इसी लिबास से अपनी नाक साफ कर ली। बादशाह ने देख लिया और बहुत ग़ुस्सा होकर कहा हमारे लिबास का यही मान है। शिबली^र के दिल में चूँकि अल्लाह तआला का भय था इसलिए उनके दिल में इस घटना का ऐसा असर हुआ कि बेहोश हो गए और जब होश आया तो कहा कि गवर्नर के काम से इस्तीफा देता हूं। बादशाह ने कारण पूछा तो कहा कि आप ने इस सरदार को लिबास दिया था जिस का इस ने सम्मान न किया तो आप उस पर इतना नाराज़ हुए लेकिन ख़ुदा ने जो मुझे अनगिनत नेअमतें दी हैं यदि उनकी अवहेलना करूंगा और उनका शुक्रिया अदा न करूंगा तो मुझे कितनी सज़ा मिलेगी। इसके बाद आप जुनैद^र के पास गए और कहा कि मुझे अपना शिष्य बना लीजिए। उन्होंने कहा मैं तुझे शिष्य नहीं बनाता तू गवर्नर रहा है और इस हालत में तूने अल्लाह तआला की सृष्टि पर कई प्रकार के अत्याचार किए होंगे। उन्होंने कहा इसका कोई इलाज भी है। जुनैद^र ने कहा कि जिस क्षेत्र के तुम राज्यपाल रहे हो उस में जाओ और हर घर में जा कर कहो कि अगर मुझसे किसी पर कोई अत्याचार हुआ है तो वह बदला ले ले। अत: उन्होंने ऐसा ही किया।

आप के बारे में लिखा है कि आप जब नफिल पढ़ते और शरीर में किसी प्रकार की सुस्ती पाते या दिल में ऐसे विचार आते जो उन्हें दूसरी ओर आकर्षित करना चाहते तो लकड़ी लेकर अपने शरीर को पीटना शुरू कर देते चाहे लकड़ी टूट जाती और फिर पढ़ना शुरू कर देते। आरम्भ में तो लकड़ियों का गट्ठा अपने पास रखते थे। यह चरम था और मुझे लगता है कि इस्लाम इस बात को पसन्द नहीं करता। लेकिन यह उनका अपने स्वयं

के बारे में मामला है इसलिए मैं उन पर कोई आपत्ति भी नहीं करता। हाँ मेरे पास नफ्स को सज़ा देने का यह तरीका है कि अगर किसी रकअत में कोई विचार उत्पन्न हो तो देखना चाहिए कि किस इबारत के पढ़ते समय यह समय विचार पैदा हुआ है। जब यह पता चल जाए तो उसी जगह से फिर पढ़ना शुरू कर देना चाहिए। इस तरह से जब नफ्स यह देख लेगा कि यह तो अल्लाह तआला की तरफ ही झुक रहा है और मेरी नहीं मानता तो विचारों के फैलाने से रुक जाएगा और सुकून हासिल हो जाएगा।

इक्कीसवां तरीका

यह तरीका एक रूप से बहुत बड़ा और बहुत अधिक काम में आने वाला है और वह यह कि عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ (अलमोमिनून: 4) मोमिन कोई व्यर्थ काम नहीं किया करते। जिन लोगों को व्यर्थ विचारों की आदत होती है उन्हीं के दिलों में नमाज़ पढ़ते समय दूसरे विचार आते हैं। लेकिन अगर वह इस तरह करें कि प्रथम दिन से ही इस प्रकार के विचार न आने दें तो उन्हें अराजकता की स्थिति पैदा ही नहीं होगी। लेकिन अक्सर लोग शेखचिल्ली की तरह विचारों में पड़े रहते हैं। हालांकि उनका कोई लाभ नहीं होता। ऐसे विचार जो केवल काल्पनिक हों उनमें संलग्न होने के लिए नफ्स को कभी इजाज़त नहीं देनी चाहिए। हाँ उपयोगी और लाभदायक बातों के बारे में सोचने में कोई हर्ज नहीं है। विशेष रूप से उन मामलों में सोचना जो पहले हो चुके हैं और उन पर अब सोचने से कोई लाभ नहीं हो सकता, चिंता करना तो सीमा से बढ़ी हुई मूर्खता है।

यह एक स्पष्ट बात है कि मानवीय शक्तियों को जिस तरफ लगाया जाए वह उधर ही आकर्षित हो जाती हैं। अत: जब कोई व्यक्ति अनुचित विचारों में दिमाग़ को लगाता है तो वह उचित बातों की ओर ध्यान करने में असमर्थ रहता है। अत: व्यर्थ विचारों से मस्तिष्क को रोककर उच्च और उपयोगी विचारों पर लगाना चाहिए। जब यह कोशिश की जाएगी तो हमेशा उपयोगी मामलों पर विचार करने की ओर तबीयत आकर्षित होगी। और एक बात में संलग्न होने की स्थिति में दूसरी ओर विचारों को लगा देना उपयोगी नहीं

बल्कि व्यर्थ है, सिवाए उसके जो अल्लाह चाहे। अत: ऐसे व्यक्ति का मन जिसने उसे उपयोगी बातों पर विचार करने की आदत डाली है, नमाज़ के समय इधर उधर जाएगा ही नहीं।

बाईसवां तरीका

यह भी एक भव्य तरीका है और रूहानियत की पूर्णता तक पहुंचा देता है। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पूछा गया था कि एहसान किया है। आपने फ़रमाया-

اَنْ تَعْبُدَاللّٰهَ كَاَنَّكَ تَرَاهُ فَاِنْ لَّمْ تَكُنْ تَرَاهُ فَاِنَّهٗ يَرَاكَ

(बुख़ारी किताबुल ईमान)

अल्लाह तआला की इस तरह इबादत की जाए कि मानो बन्दा ख़ुदा को देख रहा है या कम से कम यह विचार हो कि ख़ुदा मुझे देख रहा है। अत: जब नमाज़ पढ़ने के लिए खड़े हो तो यही नक्शा अपनी आंखों के सामने जमाओ कि मानो अल्लाह तआला के सामने खड़े हो और वह तुम्हें सामने दिखाई दे रहा है, किसी रूप में नहीं बल्कि अपनी महिमा और महानता के साथ। इस तरह अल्लाह तआला की महानता और बड़ाई दिल में बैठ जाती है और नफ्स स्वयं समझ लेता है कि ऐसे समय में इसे कोई व्यर्थ हरकत नहीं करनी चाहिए। फिर अगर ख़ुदा को न देख सको तो कम से कम इतना तो यकीन हो कि ख़ुदा मुझे देख रहा है और मेरे दिल के सभी विचारों को पढ़ रहा है। इंसान देखे कि जब मैं ज़बान से अल्हम्दो लिल्लाह कह रहा हूँ, मेरा दिल भी अल्हमदो लिल्लाह कह रहा है या किसी और विचार में संलग्न है। और अगर दिल किसी ओर आकर्षित है तो उसे बुरा भला कहे और अपनी ज़बान के साथ शामिल कर ले। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमाते हैं कि वह बंदा जो दो रकअत भी ऐसी पढ़ता है कि उनमें अपने नफ्स से बातें नहीं करता उसके सारे गुनाह माफ हो जाते हैं। अब विचार करो कि वह व्यक्ति जिसकी हमेशा ही ऐसी हालत रहती हो वह कितना पुण्य प्राप्त कर लेगा। अत: नमाज़ में अल्लाह तआला की तरफ ध्यान बनाए रखना कोई मामूली बात नहीं है। फिर ये तरीके जो केवल अल्लाह तआला

के अहसान और फज़ल से मैंने आप लोगों को बताए हैं उन्हें मामूली न समझना चाहिए बल्कि उनका पूर्णता पालन करो और याद रखो कि अगर पालन करोगे तो बहुत बरकत पाओगे।

नमाज़ की समाप्ति पर जो अस्सलामो अलैकुम कहा जाता है इस में भी अजीब इशारा है और इसमें ध्यान बनाए रखने की तरफ मनुष्य को आकर्षित किया गया। देखो अस्सलामो अलैकुम तब कहा जाता है, जबकि कोई व्यक्ति कहीं से आता है। नमाज़ ख़त्म करने के समय जब एक मोमिन अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाह कहता है तो मानो वह यह कहता है कि मैं ख़ुदा तआला के समक्ष अपनी बन्दगी को अभिव्यक्त करने के लिए गया था अब वहाँ से वापस आया हूँ और तुम्हारे लिए सलामती और रहमत लाया हूँ। मगर क्योंकि वह व्यक्ति पूरे समय वहीं मौजूद होता है इसलिए इसका यही मतलब लिया जा सकता है कि उसकी रूह अल्लाह तआला के अस्ताना पर गिरी हुई थी और वह इबादत में ऐसा संलग्न था कि मानो इस दुनिया से ग़ायब था। अतः अस्सलामो अलैकुम का कहना नमाज़ की समाप्ति पर इस बात की तरफ इशारा है कि मोमिन को चाहिए कि सावधान होकर अपनी नमाज़ की रक्षा करे क्योंकि उस समय वह अल्लाह तआला के दरबार में हाज़िर होता है। इसीलिए अल्लाह तआला ने भी फरमाया है- هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ (अल-अनआम: 93) मोमिनों की यह शान है कि वह अपनी नमाज़ों की खूब रक्षा करते हैं। अर्थात शैतान उनकी नमाज़ को खराब करना चाहता है लेकिन वे उसके हमलों से उसे अच्छी तरह बचाते हैं। अतः प्रत्येक को चाहिए कि अपनी नमाज़ की हिफाज़त करे और जब नमाज़ पढ़ने खड़ा हो तो यह समझे कि ख़ुदा तआला के समक्ष चला गया हूं। और जब नमाज़ ख़त्म हो तो अपने दाहिने और बाएँ लोगों को बशारत दे कि मैं तुम्हारे लिए सलामती लाया हूँ। लेकिन अगर कोई व्यक्ति ख़ुदा के समक्ष नहीं जाता बल्कि अपने विचारों में ही संलग्न रहता है तो उसे सोचना चाहिए कि जब वह अस्सलामो अलैकुम वरहमतुल्लाह कहता है तो कितना झूठ बोलता है। वह लोगों को बताना चाहता है कि

मैं ख़ुदा के सामने से आ रहा हूँ हालांकि वह वहाँ गया ही नहीं था। अतः आप लोगों को कोशिश करनी चाहिए कि पूरी तरह अपनी नमाज़ की सुरक्षा करें और शैतान से खूब मुकाबला करते रहें जो आप को ख़ुदा के समक्ष से हटाने की कोशिश करता है। और याद रखें कि अगर आप पूरी नमाज़ में भी इससे मुकाबला करते रहेंगे और उस से आगे गिरेंगे नहीं तो अल्लाह तआला आप को अपने दरबार में ही समझेगा। लेकिन अगर गिर जाएंगे तो अल्लाह तआला भी आपका हाथ छोड़ देगा। इसलिए आप को मुकाबला ज़रूर करते रहना चाहिए। अगर इस तरह करेंगे तो आख़िरकार आप ही सफल होंगे।

ज़िक्र जहरी (ऊंची आवाज़ से)

इस समय तक मैंने तीन प्रकार के ज़िक्रों का वर्णन किया है। प्रथम नमाज़, दूसरा क़ुरआन करीम, तीसरे वे ज़िक्र जो नमाज़ के अतिरिक्त किए जाते हैं लेकिन एकांत में किए जाते हैं। अब एक प्रकार का ज़िक्र बाकी रह गया और वह ज़िक्र है जो मज्लिस में किया जाता है। इस ज़िक्र के भी दो तरीके हैं-

पहला यह तरीका

कि अपने धर्म वालों के साथ जहां मिलने का मौका मिले वहाँ बजाय व्यर्थ और बेहूदा बातों के अल्लाह तआला की शक्तियों, उसकी महिमा और उसके परोपकार का ज़िक्र किया जाए, उसकी आयतों का वर्णन हो इससे दिल साफ होता है और हृदय पर अत्यंत नेक प्रभाव पड़ता है। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से रिवायत है कि एक बार आप घर से बाहर आए तो देखा कि मस्जिद में कुछ लोग दुआ में संलग्न हैं और कुछ एक गोला बनाकर बैठे हैं और धर्म की बातें कर रहे हैं। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उन में बैठ गए जो गोला बनाकर बैठे थे और कहा कि यह काम इससे बेहतर है जो दूसरे लोग कर रहे हैं। इससे मालूम होता है कि ज़िक्र ज़ाहिरी भी कभी कभी ज़िक्र सिर्री (छुपे हुए) से फ़ज़ीलत (उत्कृष्टता) रखता है। कभी-कभी मैंने इसलिए कहा है कि वह भी अपने समय पर आवश्यक होता है। हाँ जिस समय लोग इकट्ठा हों उस समय ज़िक्र ज़ाहिरी उपयोगी होता है, क्योंकि इसके द्वारा अन्य लोगों के अनुभव सुनकर और अपने उन्हें सुना कर लाभ और उपयोगिता का अधिक मौका

मिलता है और ऐसे समय में अलग ज़िक्र कई बार अहंकार का कारण भी हो जाता है। क़ुरआन का दर्स भी इस प्रकार के ज़िक्र में सम्मिलित है और एक धर्म मानने वालों में ख़ुत्बा तथा उपदेश भी इसी में शामिल हैं।

दूसरी किस्म

इस ज़िक्र की यह है कि जो विरोधियों की मज्लिसों में किया जाता है। इस्लाम के अतिरिक्त सभी धर्म अल्लाह तआला की विशेषताओं में कुछ न कुछ कमी और अधिकता करने वाले हैं। अत: उनके सामने अल्लाह तआला को उसकी वास्तविक शान और शौकत में प्रकट करना भी एक ज़िक्र है। जैसा कि सूरत मुद्दस्सर में अल्लाह तआला फरमाता है कि-

يَاَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ - قُمْ فَاَنْذِرْ - وَ رَبَّكَ فَكَبِّرْ (अल-मुदस्सिर- 2,4)

इसमें लोगों को अल्लाह तआला के अज़ाब से डराने के अतिरिक्त उनके सामने अल्लाह तआला की बड़ाई बयान करने का आदेश दिया गया है और तकबीर ज़िक्र में शामिल है। अत: अन्य धर्मों के लोगों के सामने अल्लाह तआला की विशेषताओं का वर्णन करना और उसकी सत्यता के लिए तर्क देना भी ज़िक्रे इलाही में शामिल हैं।

سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلٰى (अलआला: 2)

में भी इसी ज़िक्र की ओर इशारा किया है और साफ शब्दों में

فَذَكِّرْ اِنْ نَّفَعَتِ الذِّكْرٰى (अलआला: 10)

कहकर उसका नाम स्पष्ट शब्दों में 'ज़िक्र' रखा है।

ज़िक्र के लाभ

अब में ज़िक्र करने के कुछ लाभ बताता हूं। **सब से बड़ा लाभ** जो ज़िक्र करने से प्राप्त होता है वह तो यह है कि अल्लाह तआला की रज़ा हासिल हो जाती है। इस का यह मतलब नहीं कि यह नेक काम है इसलिए दूसरे कामों की तरह इस से ख़ुदा प्रसन्न हो जाता बल्कि, इस से विशेष रूप से प्रसन्न होता है क्योंकि जितना कोई बड़ा काम हो उतना ही उसका बड़ा पुरस्कार भी दिया जाता है। ज़िक्र से संबंधित एक जगह अल्लाह तआला क़ुरआन करीम में फ़रमाता है। 'वलज़िक्रुल्लाह अकबर' कि अल्लाह तआला का

ज़िक्र बहुत बड़ा है और दूसरे स्थान पर फ़रमाया-

وَعَدَ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَ مَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِىْ جَنّٰتِ عَدْنٍ وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ اَكْبَرُ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ (अत्तौब: 72)

कि सब से बड़ा पुरस्कार अल्लाह की रज़ा है। चूंकि अकबर का पुरस्कार भी अकबर (सबसे बड़ा) ही हो सकता है। असगर (सबसे छोटा) नहीं। इसलिए इन दोनों अकबरों ने बता दिया कि अल्लाह की रज़ा किस के बदले में मिलती है। ज़िक्रुल्लाह के बदला में इस आयत में अल्लाह तआला ने दूसरे पुरस्कार को वर्णन फरमा कर رِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ اَكْبَرُ से बता दिया कि 'रिज़वान' कोई और नई चीज़ है और यह सबसे बड़ी है और वास्तव में बन्दा के लिए सबसे बड़ा पुरस्कार यही है कि अल्लाह तआला उस पर राज़ी हो। इस बड़े पुरस्कार को प्राप्त करने के लिए अल्लाह तआला ने फरमा दिया कि ज़िक्रुल्लाह करोगे तो यह दूसरा अकबर जो रिज़वानुल्लाह है, मिल जाएगा।

दूसरा लाभ यह है कि इससे दिल की संतुष्टि मिलती है अत: अल्लाह तआला फरमाता है اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ تَطْمَئِنُّ قُلُوْبُهُمْ بِذِكْرِ اللّٰهِ اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوْبُ (अर्रअद:29) दिलों को ज़िक्र से सन्तुष्टि प्राप्त होती है, क्यों? इसलिए कि घबराहट उस समय पैदा होती है जब व्यक्ति यह समझे कि मैं इस मुसीबत से मरने लगा हूँ और अगर यह विश्वास हो कि प्रत्येक परेशानी और असुविधा का इलाज है तो वह नहीं घबराएगा। अत: जब कोई व्यक्ति अल्लाह तआला का ज़िक्र करता है और समझता है कि अल्लाह तआला असीमित शक्तियां रखता है और हर प्रकार के कष्टों को दूर कर सकता है तो उसका दिल कहता है कि जब मेरा ऐसा ख़ुदा है तो मुझे किसी मुसीबत से घबराने की क्या ज़रूरत है। वह ख़ुद इसे दूर कर देगा इस तरह उसे संतुष्टि प्राप्त हो जाती है। **तीसरा लाभ** यह है कि ज़िक्र करने वाले बन्दे को अल्लाह तआला अपना दोस्त बना लेता है और इसी दुनिया में उसे

अपनी बारगाह में याद करता है।

فَاذْكُرُوْنِيْٓ اَذْكُرْكُمْ وَ اشْكُرُوْا لِيْ وَ لَا تَكْفُرُوْنِ (अलबक़रा:153)

हे मेरे बन्दो ! तुम मेरा ज़िक्र करो मैं तुम्हारा ज़िक्र करूंगा। अल्लाह तआला को याद करना यही है कि अपना सानिध्य प्रदान करता है। जिस तरह दुनिया में राजा का किसी को याद करना यही होता है कि उसे अपने दरबार में बुलाता है उसी तरह अल्लाह तआला भी करता है।

चौथा लाभ यह है कि अल्लाह तआला का ज़िक्र आदमी को बुराइयों से रोकता है। अत: क़ुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है

اُتْلُ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنَ الْكِتٰبِ وَ اَقِمِ الصَّلٰوةَ ؕ اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَ الْمُنْكَرِ ؕ وَ لَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ ؕ وَ اللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَصْنَعُوْنَ

(अन्कबूत: 46)

रसूले करीम को अल्लाह तआला फरमाता है कि तुझको ख़ुदा ने जो किताब दी है वह लोगों को पढ़ कर सुना और नमाज़ को क़ायम कर। नमाज़ बुराइयों और गन्दिगयों से रोकती है और अल्लाह का ज़िक्र करना बहुत बड़ा है और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह तआला उसे जानता है। जैसा कि पहले मैंने बताया है नमाज़ भी ज़िक्रुल्लाह है। यह साबित हो गया कि ज़िक्रुल्लाह गन्दगियों और बुराइयों से रोकता है। क्यों? इसलिए कि ज़िक्रुल्लाह एक बड़ी भारी चीज़ है जब शैतान के सिर पर मारा जाएगा तो वह मर जाएगा और बुराइयों की तहरीक नहीं होगी।

पांचवां लाभ यह है कि दिल मज़बूत होता है मुकाबला की शक्ति पैदा होती है। व्यक्ति हारता नहीं बल्कि मुकाबला में मज़बूती से खड़ा रहता है जैसा कि अल्लाह तआला फरमाता है-

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا لَقِيْتُمْ فِئَةً فَاثْبُتُوْا وَ اذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ (अनफाल: 46)

हे मुसलमानो! जब किसी शक्ति के मुकाबला में जाओ और वह ज़बरदस्त हो तो उसके लिए यह करो कि अक्सर अल्लाह तआला का ज़िक्र करना

शुरू कर दिया करो। इसका नतीजा यह होगा कि तुम्हारे दुश्मनों के पांव उखड़ जाएंगे और तुम उस पर जीत पा लोगे।

छठा लाभ यह है कि ज़िक्र करने वाला व्यक्ति अपने हर उद्देश्य में सफल हो जाता है बशर्ते वह सच्चे दिल से ज़िक्र करता हो। इसका सबूत भी इसी आयत से निकलता है जो मैंने पांचवें लाभ से संबंधित पढ़ी है। अल्लाह तआला फरमाता है- وَ اذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ अल्लाह तआला का ज़िक्र करो ताकि तुम सफल हो जाओ।

सातवां लाभ यह है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया है कि कयामत के दिन सात लोगों के सिर पर ख़ुदा का साया होगा (सुनन तिरमज़ी)। और उन में से एक ज़िक्र करने वाला होगा। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमाते हैं कि वह ऐसा ख़तरनाक दिन होगा कि सभी मानव डरते होंगे और अल्लाह तआला उस दिन ऐसा क्रोधित होगा जैसा कभी नहीं हुआ। क्योंकि सभी दुष्ट लोग उसके सामने प्रस्तुत किए जाएंगे। सूरज बहुत करीब हो जाएगा। ऐसी स्थिति में जिस पर अल्लाह तआला का साया होगा समझ लेना चाहिए कि वह कैसा भाग्यशाली होगा।

आठवां लाभ यह है कि ज़िक्र करने वाले की दुआ स्वीकार हो जाती है। क़ुरआन में जो दुआएं आई हैं उनसे पहले ज़िक्र अर्थात तस्बीह और तहमीद भी आई है। पहली दुआ सूर: फातिहा ही है, उसको

بسم الله الرحمن الرحيم ۝ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۝

से शुरू किया है। और اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ को बीच में रखा है। जो आधी अल्लाह तआला के लिए और आधी बन्दा के लिए है। फिर اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَ لَا الضَّآلِّيْنَ फरमाया यह दुआ है। तो पहले अल्लाह तआला ने ज़िक्र रखा है और बाद में दुआ। दुनिया में भी हम देखते हैं कि जब कोई मांगने वाला किसी के पास आता है तो पहले उसकी प्रशंसा करता है और फिर अपना प्रश्न प्रस्तुत करता है। तो जब मनुष्य ख़ुदा के सामने जाता है

तो उसे पहले ख़ुदा तआला की शक्ति और अपनी विनम्रता को स्वीकार कर लेना चाहिए। हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम ने भी अपने बारे में इसी तरह दुआ की है कि -

لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ ۖ اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ (अल अंबिया : 88)

पहले अल्लाह तआला की महिमा वर्णन की है और फिर अपनी हालत पेश की है। फिर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमाते हैं-

مَنْ شَغَلَهٗ ذِكْرِيْ عَنْ مَسْئَلَتِيْ اَعْطَيْتُهٗ اَفْضَلَ مَا اُعْطِي السَّائِلِيْنَ

ख़ुदा तआला फरमाता है कि जो कोई मेरे ज़िक्र में लगा रहता है उसे मैं, उसकी अपेक्षा जो वह मांगता रहता है, अधिक देता हूँ। इस हदीस का यह मतलब नहीं कि दुआ नहीं करनी चाहिए। क्योंकि सूरे फातिहा जो उम्मुल किताब है इसमें ज़िक्र के साथ दुआ भी है और क़ुरआन और हदीसों में बहुत सी दुआएँ सिखाई गई हैं, बल्कि यह मतलब है कि जो व्यक्ति ज़िक्र न करे और दुआ ही करे उससे उस व्यक्ति को अधिक दिया जाता है जो दुआ के अतिरिक्त ज़िक्र भी करे और दुआ के समय से बचाकर ज़िक्र के लिए समय व्यतीत करे।

नौवां लाभ यह है कि गुनाह माफ होते हैं रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया है कि जो तकबीर और तहमीद और तस्बीह करता है उसके गुनाह माफ हो जाते हैं यद्यपि समुद्र के झाग के बराबर क्यों न हों। (तिर्मिज़ी)

दसवां लाभ यह है कि बुद्धि तेज़ हो जाती है और ज़िक्र करने वाले पर ऐसे ऐसे मआरिफ़ और तथ्य खुलते हैं कि वह ख़ुद भी हैरान हो जाता है। अल्लाह तआला फरमाता है-

اِنَّ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ اخْتِلَافِ الَّيْلِ وَ النَّهَارِ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِي الْاَلْبَابِ الَّذِيْنَ يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ قِيٰمًا وَّ قُعُوْدًا وَّ عَلٰى جُنُوْبِهِمْ وَ يَتَفَكَّرُوْنَ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا ۚ سُبْحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (आले इमरान: 191-192)

कि पृथ्वी और आकाश का जन्म तथा दिन और रात के मतभेद में बहुत सी निशानियां हैं लेकिन उन्हीं लोगों के लिए जो बुद्धिमान हों। फिर बताया कि बुद्धिमान लोग वे होते हैं जो अल्लाह तआला के ज़िक्र में संलग्न और उसके कामों पर फिक्र करने में व्यस्त रहते हैं।

ग्यारहवां लाभ यह है कि तक्वा (संयम) पैदा होता है। हदीस में आता है-

فَاِنْ ذَكَرَنِیْ فِیْ نَفْسِهٖ ذَكَرْتُهٗ فِیْ نَفْسِیْ وَاِنْ ذَكَرَنِیْ فِیْ مَلَاءٍ ذَكَرْتُهٗ فِیْ مَلَاٍ خَیْرٍ مِنْهُمْ وَاِنْ تَقَرَّبَ اِلَیَّ شِبْرًا تَقَرَّبْتُ اِلَیْهِ ذِرَاعًا وَاِنْ تَقَرَّبَ اِلَیَّ ذِرَاعًا اِقْتَرَبْتُ اِلَیْهِ بَاعًا وَاِنْ اَتَانِیْ یَمْشِیْ اَتَیْتُهٗ هَرْوَلَةً

(बुख़ारी किताबुल तौहीद)

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमाते हैं कि अल्लाह तआला फरमाता है कि मेरा बन्दा जब दिल ही दिल में मेरा ज़िक्र करता है तो मैं भी अपने दिल ही दिल में ज़िक्र करता हूँ। जैसे जब व्यक्ति कहता है सुबहान अल्लाह अर्थात पवित्र है अल्लाह तआला तो अल्लाह तआला भी बंदा के बारे में कहता है कि तुझे भी पवित्रता प्राप्त हो। और जब अल्लाह तआला यह कह देता है तो मिल ही जाती है। फिर फरमाता है जब बंदा लोगों में वर्णन करता है तो मैं उन लोगों से बेहतर, जिनमें वह मेरा ज़िक्र करता है, उस का ज़िक्र करता हूँ। अर्थात मुत्तिकयों और नेकों में उस का ज़िक्र बुलंद करता हूँ और दुनिया स्वीकार करती है कि वह मुत्तक़ी (संयमी) है।

बारहवां लाभ यह है कि मुहब्बत बढ़ती है क्योंकि मनुष्य का नियम है कि जिस चीज़ से हर समय उस का संबंध रहे उससे मुहब्बत पैदा हो जाती है। यहां तक कि जिस गांव या शहर मैं आदमी रहता है उस से भी मुहब्बत पैदा हो जाती है। अत: जब बंदा सुबह व शाम बल्कि हर अवसर पर अल्लाह तआला को बार बार याद करता और नाम लेता है तो धीरे धीरे अल्लाह तआला का प्रेम उसके दिल में बढ़ता जाता है।

ये हैं ज़िक्रुल्लाह के लाभ जो मैंने संक्षेप में वर्णन कर दिए हैं और दुआ करता हूँ कि आप लोगों को और मुझे भी अल्लाह तआला इनसे लाभांवित करे। आमीन

☆ ☆ ☆